ज्ञानयज्ञ योजना-प्रयागराज 50,000

प्रयागराज की गायत्री परिवार ज्ञानयज्ञ शाखा के सौजन्य से **अच्छे व्यक्तित्वों के निर्माण तथा भूले-भटके समाज को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने की योजना।**

1450 विद्यालय, 200 कारागार में और 100 कार्यकर्त्ताओं द्वारा वितरित किया जा रहा है।

भिलाई अश्वमेध महायज्ञ की भूमि का सौभाग्य बढ़ाने पहुँचीं श्रद्धेया जीजी 4

संघ प्रमुख से सांस्कृतिक पुनरुत्थान की योजनाओं पर चर्चा 7

शान्तिकुञ्ज ने जोशीमठ में 1000 परिवारों की सहायता की 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

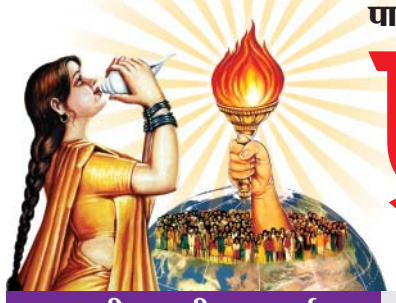

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 फरवरी 2023

वर्ष : 35, अंक : 15

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 27 जनवरी 2023

वार्षिक चंदा : ₹ 80/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-

प्रति अंक : ₹ 4/-

नारी सशक्तीकरण वर्ष

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

निकृष्टता से उबरें, महानता अपनाएँ

प्रकृति का प्रपंच

प्रकृति अलमस्त बच्चे की तरह निरन्तर अपने खेल खिलवाड़ में लगी रहती है। पंचतत्त्वों के रेत बालू को बटोरना, सँजोना, बढ़ाना, घटाना, बिगाड़ना बस यही उसके क्रिया कलाप का केन्द्र बिन्दु है। बाजीगर का तमाशा देखने में अपनी सुधबुध खो बैठने वाले मनचले दर्शकों की तरह लोग उस कौतुक, कौतूहल को देखने के लिए एकत्रित हो जाते हैं। हाथ की सफाई का कमाल उन्हें ऐसा सुहाता है कि कहाँ जाना था, क्या करना था, जैसे तथ्यों को भूल बैठते और बेतुकी कल्पनाओं में उड़ने-तैरने लगते हैं।

यही है प्रकृति का प्रपंच, जिसमें आम आदमी बेतरह उलझा, उद्विग्न, खिन्न, विपन्न होते देखा जाता है। इन प्रपंच-कौतुकों में मन भी सहायता देता है, रोने-हँसने तक लगता है।

इस दिवास्वप्न की प्रवञ्चना का पता तब चलता है, जब आँख खुलती है, नशे की खुमारी उतरती है और भगवान के दरबार में पहुँच कर सौंपे गए कार्य के सम्बन्ध में पूछताछ की बारी आती है। इससे पूर्व यह पता ही नहीं चलता कि कितना गहरा भटकाव सिर पर हावी रहा और वह करता रहा जिसे करने के लिए उन्मादग्रस्तों के अतिरिक्त और कोई कदाचित ही तैयार हो सकता है।

अब आइए जरा समझदारों की तरह सोचना आरम्भ करें। मनुष्य जीवन स्रष्टा की बहुमूल्य धरोहर है, जो स्वयं को सुसंस्कृत और दूसरों को समुन्नत करने के दो प्रयोजनों के लिए सौंपा गया है। इसके लिए अपनी योजना अलग बनानी और अपनी दुनिया अलग बसानी पड़ेगी। मकड़ी अपने लिए अपना जाल स्वयं बुनती है। उसे कभी-कभी बन्धन समझती है तो रोती कलपती भी है, किन्तु जब भी वस्तुस्थिति की अनुभूति होती है तो समूचा मकड़जाल समेट कर उसे गोली बना लेती है और पेट में निगल लेती है। अनुभव करती है कि जिस स्थिति में अनेक व्यथा-वेदनाएँ सहनी पड़ रही थीं, उसकी सदा सर्वदा के लिए समाप्ति हो गई।

अपने को दीन-हीन, दयनीय, दरिद्र, अनगढ़, अभागा, बाधित समझने वालों को वस्तुतः यही अनुभव होता है कि वे दुरूह परिस्थितियों से जकड़े हुए हैं, किन्तु जिनकी मान्यता यह है कि उनमें उठने और महानता की मञ्जिल तक जा पहुँचने की शक्ति है, वे प्रतिकूलताओं को अनुकूलता में बदल सकने में भी समर्थ होते हैं। उठने में सहायता करने का श्रेय किसी को भी दिया जा सकता है और गिरने-गिराने का दोषारोपण भी किसी पर भी किया जा सकता है, पर वस्तुस्थिति ऐसी है कि यदि अपने को ही व्यक्तित्व और कृतित्व को ऊँचा उठाने और गिराने के लिए उत्तरदायी ठहराया जाये, तो यह मान्यता सबसे अधिक सही होगी।

आप सामान्य नहीं हैं

बादल बरसते सभी जगह समान रूप से हैं, पर उनका पानी उतनी ही मात्रा में वहाँ जमा होता है, जहाँ जितनी गहराई या पात्रता होती है। वर्षा के अनुग्रह से व्यापक भू-क्षेत्र में हरियाली उगती और लहराती है, पर रेगिस्तानों और चट्टानों में एक तिनका तक जमता दृष्टिगोचर नहीं होता है। उसमें बादल का पक्षपात नहीं, भूमि की अनुर्वरता ही इसके लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी है।

धुलाई के बिना रँगाई निखरती कहाँ है? गलाई के बिना ढलाई किसने कर दिखाई है? मल-मूत्र से सने बच्चे को माता तब ही गोद में उठाती है, जब उसे नहला-धुला कर साफ- सुथरा बना देती है। मैला, गँदला पानी पीने के काम कहाँ आता है? मैले दर्पण में छवि कहाँ दीख पड़ती है? जलते अंगारे पर यदि राख की परत जम जाए तो न उसकी गरमी का आभास होता है, न चमक का। बादलों से ढक जाने पर सूर्य, चन्द्र तक अपना प्रकाश धरती तक नहीं पहुँचा पाते। कुहासा छा जाने पर दिन में भी लगभग रात जैसा अँधेरा छा जाता है और कुछ दूरी की वस्तुएँ तक सूझ नहीं पड़तीं।

इन्हीं सब उदाहरणों को देखते हुए अनुमान लगाया जा सकता है कि मनुष्य यदि लोभ की हथकड़ियाँ, मोह की बेड़ियों और अहंकार की जंजीरों में जकड़ा हुआ रहे, तो उसकी समस्त क्षमताएँ नकारा बन कर रह जाएँगी। बँधुआ मजदूर रस्सी में बँधे पशुओं की तरह बाधित और विवश बने रहते हैं। वे अपना मौलिक पराक्रम गँव बैठते हैं और उसी प्रकार चलने एवं करने के लिए विवश होते हैं, जैसा कि बाँधने वाला उन्हें चलने के लिए दबाता-धमकाता है। कठपुतलियाँ अपनी मर्जी से न उठ सकती हैं, न चल सकती हैं। मात्र मदारी ही उन्हें नचाता कुदाता है।

अपनी बेड़ियाँ तोड़ो

कुसंस्कारों और कुप्रचलनों का दुहरा दबाव ही मनुष्य के, मौलिक चिंतन का सही मार्ग अपनाने में भारी अवरोध बनकर खड़ा हो जाता है और उत्कृष्टता की दिशा में सहज सम्भव हो सकने वाली प्रगति बुरी तरह अवरुद्ध होकर रह जाती है। अन्तरात्मा ऊँचा उठने के लिए कहती है और सिर पर छाया हुआ दुष्प्रवृत्तियों का आकाश जितना विस्तृत नरक, नीचे गिरने के लिए बाधित करता है। फलतः मनुष्य त्रिशंकु की तरह अधर में ही लटका रह जाता है। यह असमंजस बना ही रहता है कि उसका क्या होगा? भविष्य न जाने कैसा बन कर रहेगा?

इस विषम विडम्बना से छूटने का एक ही उपाय है कि दोष-दुगुर्णों की जो भारी चट्टानें सिर पर लदी हैं, उन्हें किसी भी कीमत पर हटाया-गिराया जाए अन्यथा उतनी बोझिल विपन्नता को सिर पर लादे हुए कुछ दूर तक भी आगे चल सकना सम्भव न होगा। **वासनाएँ** आदमी को नींबू की तरह निचोड़ लेती हैं। जीवन में से स्वास्थ्य, संतुलन, आयुष्य जैसा सब कुछ निचोड़ कर उसे छिलके जैसा निस्तेज बनाकर रख देती हैं।

तृष्णाओं की खाई इतनी गहरी है, जिसे रावण, हिरण्यकश्यपु, वृत्तासुर जैसे प्रबल पराक्रमी भी समूचा पौरुष दाँव पर लगा देने के बाद भी पाट सकने में तनिक भी समर्थ न हुए। सिकंदर जैसे सफलताओं के धनी भी मुट्ठी बाँधे आए और हाथ पसारे चले गए। **अहंकार** प्रदर्शित करने के दर्प में संसार भर को चुनौती देने और ताल ठोकने वाले किसी समय के दुर्दान्त दैत्यों में से अब कोई कहीं दीख नहीं पड़ता। राजाओं के मणि-मुक्तकों से जड़े राजमुकुट और सिंहासन न जाने धराशायी होकर कहाँ धूल चाट रहे होंगे? यह करतूतें उन्हीं पैशाचिक दुष्प्रवृत्तियों की हैं जो मनुष्य पर उन्माद की तरह छाई रहती हैं और उसकी बहुमूल्य जीवन सम्पदा को कौड़ी के मोल गँवा देने के लिए दिग्भ्रमित करती रहती हैं।

स्वार्थ सिद्धि की ललक लिप्सा वस्तुतः अनर्थ के अतिरिक्त और कुछ हाथ लगने नहीं देती। स्थिति उस जादुई राजमहल जैसी बन जाती है, जिसमें प्रवेश करने पर दुर्योधन को जल के स्थान पर थल और थल के स्थान पर जल दीखने लगा था। जो करना चाहिए, उसका निरन्तर तिरस्कार-बहिष्कार ही होता रहता है और अपनी चतुरता की डींग हाँकने वाले निरन्तर वह करते रहते हैं, जो नहीं ही करना चाहिए। इस मानसिकता को, **व्यामोह** का सम्मोहन नाम देने के अतिरिक्त और क्या कहा जाए? क्या यह दुर्गति और दुर्गंध से भरी दुर्दशा ही मानव जीवन की नियति है?

जो हो, पर वास्तविकता यही है कि औसत आदमी इन्हीं परिस्थितियों में स्वेच्छापूर्वक या बाधित होकर रहने के लिए अभ्यस्त पाया जाता है। हानि को लाभ और लाभ को हानि समझने वालों के हाथ वैसी ही दुर्गति लग सकती है, जैसी कि अधिकांश लोगों के गले बँधी और छाती पर चढ़ी दिखाई देती है।

सोच बदलिए, जीवन बदल जाएगा

अचम्भा यही है कि सड़े नालों में पलने और बढ़ने वाले कीड़े, अपनी स्थिति की दयनीयता का अनुभव तक नहीं कर पाते। उससे किसी प्रकार छुटकारा पाकर इतनी भी नई सोच जुटा नहीं पाते कि यदि कीड़े की ही स्थिति में रहना था, तो फूलों पर उड़ने वाली तितलियों की तरह आकर्षक होने के सुयोग को चाहने और पाने के लिए तो मानस बनाया जाए। जब आकांक्षा तक मर गई तो उत्कर्ष की पक्षधर हलचलें भी कहाँ से, कैसे उभर सकेंगी?

मानव जीवन का परम पुरुषार्थ, सर्वोच्च स्तर का सौभाग्य एक ही है कि वह अपनी निकृष्ट मानसिकता से त्राण पाये। भ्रष्ट चिन्तन और दुष्ट आचरण वाले स्वभाव-अभ्यास को और अधिक ग्रहण करते रहने से स्पष्ट इन्कार कर दे। भूल समझ में आने पर उलटे पैरों लौट पड़ने में भी कोई बुराई नहीं है। गिनती गिनना भूल जाने पर दुबारा नये सिरे से गिनना आरम्भ करने में किसी समझदार को संकोच नहीं करना चाहिए। मानव सच्चे अर्थों में धरती पर रहने वाला देवता है। नर- कीटक, नर-पशु, नर-पिशाच जैसी स्थिति तो उसने अपनी मर्जी से स्वीकार की है। यदि वह कायाकल्प जैसे परिवर्तन की बात सोच सके, तो उसे नर से नारायण, महामानव बनने में भी देर न लगेगी। आखिर वह है तो ऋषियों, तपस्वियों, मनस्वियों और मनीषियों का वंशधर ही।

क्रान्तिधर्मी साहित्य सेट की पुस्तक 'जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र' से संकलित, सम्पादित

यह विद्यार्थियों के मन का बोझ हलका करने का समय है

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा से जुड़े विद्यालयों में पहुँच कर बच्चों का मनोबल बढ़ायें

हर माता-पिता और अभिभावक का सबसे बड़ा अरमान यही होता है कि उसकी संतान बड़ी होकर सफलता के शिखर चूमे। अभावग्रस्त या सामान्य श्रेणी के व्यक्ति चाहते हैं कि उनके बच्चे आगे चलकर उनका सहारा बनें, उनके जीवन में सुख, शान्ति, आए। हर तरह से समर्थ महानुभावों की भी यही आस रहती है कि उनकी संतान उनसे भी अधिक प्रगति करे, उनके व्यापार-कारोबार को बहुत आगे तक ले जाए। माता-पिता इसके लिए हँसते-हँसते हर प्रकार का कष्ट सहते हैं, यहाँ तक कि कर्ज लेकर भी बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए, उन्हें पढ़ाने-लिखाने के लिए संसाधन जुटाने में पीछे नहीं रहते। वर्तमान भौतिकतावादी युग में विद्यार्थियों का भी लक्ष्य यही होता है कि वे भी आगे चलकर बड़े आदमी बनें, खूब धन कमाएँ, ऊँची नौकरी और बड़ी प्रतिष्ठा पायें।

बड़ी आकांक्षा रखना, ऊँचे सपने देखना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन उसके लिए सही सोच के साथ आगे बढ़ने और जीवन का उचित प्रबन्धन करने की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत आज के विद्यार्थी अपनी स्वयं की एवं अपने अभिभावकों की आकांक्षाओं के बोझ तले जीवन की यथार्थता को समझ नहीं पा रहे। वे अपनी क्षमताओं का सही उपयोग नहीं कर पा रहे। परीक्षा का अर्थ ही जैसे बदल-सा गया है। विद्यालय में अच्छे अंक नहीं मिलने पर विद्यार्थियों में इतनी हताशा-निराशा छा जाती है कि वे आत्महत्या तक के लिए उतारू होते देखे जाते हैं।

आवश्यकता विद्यार्थियों को जीवन की गरिमा का बोध कराने की है। यदि वे इसे सही तरीके से समझ लें तो आत्म-विकास के न जाने कितने विकल्प उन्हें उपलब्ध हो सकते हैं। यदि यथार्थता का ज्ञान हो तो वे ही विद्यार्थी भय, हताशा, निराशा को दूर भगाकर इन्हीं परिस्थितियों में बेहतर परिणाम ला सकते हैं।

यह समय परीक्षाओं और तरह-तरह की प्रतियोगिताओं का है। इस समय विद्यार्थियों को हताशा, निराशा, भ्रम, भटकावों से निकालकर उनका मनोबल बढ़ाने की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से हमारे गायत्री परिवार के साथ 50 लाख से अधिक विद्यार्थी जुड़े हैं और करोड़ों विद्यार्थियों तक हमारी पहुँच है। यदि परीक्षा में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में हम उनका कुछ सहयोग कर सके तो यह समाज की बहुत बड़ी सेवा होगी।

संभावनाएँ अनन्त हैं

एक विद्यार्थी के जीवन में परीक्षा का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। परीक्षा एक नई ऊँचाई प्रदान करने का माध्यम है। हमारे देश में कक्षा 10 और 12वीं की परीक्षाएँ तो और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं, क्योंकि यहीं से विद्यार्थी को अपने भविष्य की दिशाधारा निर्धारित करने का आधार मिलता है। विविध प्रतियोगी परीक्षाओं को किसी साधना की सिद्धि की तरह देखा जा सकता है, जिसमें परीक्षार्थी के संकल्प और सपने सच होते या टूटते दिखाई देते हैं।

विद्यार्थी जीवन में परीक्षा अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, लेकिन यह किसी के भाग्य या भविष्य को तय नहीं करती, इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। किसी के भी जीवन में अनन्त संभावनाएँ विद्यमान होती हैं। स्कूली परीक्षाएँ उज्ज्वल भविष्य की संवाभावनाओं को साकार करने में रुकावट नहीं डाल सकतीं।

मात्र स्कूल की परीक्षाओं के परिणाम ही जीवन की सफलता-असफलता का मापदण्ड नहीं हुआ करते। परम पूज्य गुरुदेव ने स्कूल की शिक्षा तो मात्र पाँचवी तक की ही पूरी की थी, लेकिन वे आज सारे विश्व का पथ प्रदर्शन कर रहे हैं। महात्मा मोहनदास करमचंद गाँधी अपने यौवन काल में एक अच्छे बैरिस्टर थे। लेकिन उन्हें उनकी वकालत ने महात्मा नहीं बनाया। उन्हें उनकी माता की शिक्षा, अन्याय के प्रतिकार की भावना और राष्ट्रप्रेम की भावनाओं ने, धर्मपत्नी कस्तूरबा के सहयोग ने महात्मा के पद पर प्रतिष्ठित किया। इसी प्रकार महामानवों के जीवन चरित्र को पढ़ा जाए तो देखा जा सकता है कि उनकी महानता में बौद्धिक ज्ञान की अपेक्षा गुणों की ही महत्ता अधिक दिखाई देगी।

वर्तमान समय में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी स्वयं बताते हैं कि स्कूली शिक्षा की दृष्टि से वे बहुत कुशाग्र विद्यार्थियों में नहीं गिने जाते थे, लेकिन उनकी संगठन, प्रबंधन एवं प्रशासन की क्षमता का लोहा देश ही नहीं, सारी दुनिया मान रही है। श्री गौतम अडानी ने हाल ही में एक टेलीविजन इंटरव्यू में बताया कि पारिवारिक परिस्थितियों के कारण वे अपनी 10वीं कक्षा की पढ़ाई पूरी नहीं कर सके थे, लेकिन आज वे विश्व के तीसरे सबसे बड़े अमीर व्यक्ति हैं। स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर और सचिन तेंदुलकर को उनके विशिष्ट गुणों ने ही 'भारत रत्न' अलंकरण से विभूषित किया है।

भयभीत न हों

हमारी सनातन संस्कृति में व्यक्तित्व विकास को प्रमुखता दी जाती है, लेकिन आज मानसिकता बदल गई है। आज अर्थोपार्जन को ही जीवन की सफलता का प्रमुख आधार मान लिया गया है। जीवन की आवश्यकताएँ स्वल्प हैं, लेकिन धन कमाने की आकांक्षाएँ अथाह हैं। आज की जीवन शैली और हमारी शिक्षा प्रणाली भी ऐसी है जिसमें विद्यार्थी का सारा चिंतन गुणवान बनने की अपेक्षा धनवान बनने पर ही केन्द्रित हो गया है। अभिभावकों की भी अपने बच्चों से यही आशा रहती है। जो समर्थ हैं, वे भी समाज और मानवता के हित में कुछ सोचने और करने की अपेक्षा अधिक कमाने और सुविधा-साधन जुटाने की ही सोचते दिखाई देते हैं। इसी दृष्टि से परीक्षा के परिणाम उनकी मानसिकता को बहुत प्रभावित करते दिखाई देते हैं।

परीक्षा में सफलता के लिए भरपूर प्रयास किए जाने चाहिए, लेकिन परिणाम तो पुरुषार्थ और योग्यता के अनुरूप ही प्राप्त होंगे। असफलताओं की चिंता करने की अपेक्षा यदि सही सोच के साथ तैयारी की जाए तो निश्चित ही परिणाम कहीं बेहतर हो सकते हैं।

नए युग में अर्थोपार्जन के लिए नौकरी ही मात्र विकल्प नहीं रहा। **'स्टार्टअप'** जैसी अनेक संभावनाएँ विकसित होती जा रही हैं जिनमें डिग्री नहीं, अपनी योग्यता ही काम आती है।

चिंतन और प्रबंधन

विद्यार्थियों को स्वस्थ और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए। परीक्षा को एक खिलाड़ी के दृष्टिकोण से देखना चाहिए। खेल में जय-पराजय दोनों संभावनाएँ विद्यमान होती हैं। उसी तरह परीक्षा में अपेक्षित सफलता नहीं भी मिले तो भी यह सुनिश्चित विश्वास रखना चाहिए कि उन्होंने वर्षभर जो परिश्रम किया है, वह व्यर्थ नहीं जाएगा। सीखी गई विद्या उनके जीवन में अवश्य काम आएगी।

परीक्षा ही क्यों, वर्षभर की पढ़ाई में भी इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि हम जो कुछ पढ़ें, उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। परीक्षा तो रटकर भी पास की जा सकती है, लेकिन वह ज्ञान जीवन में नहीं उतरा तो सफलता संदिग्ध ही रहेगी। वाणिज्य विषय में बेहतर अंक प्राप्त कर लेने वाला व्यवसायी बन ही जाएगा, यह सुनिश्चित नहीं है, लेकिन जिसमें व्यवसाय करने

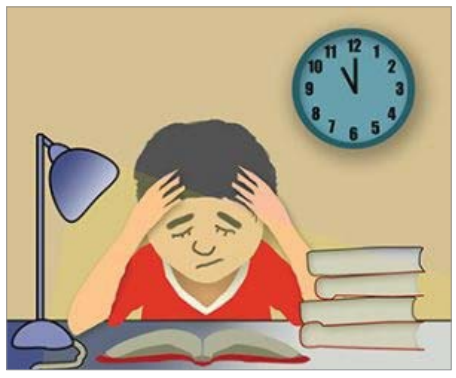

का कौशल है उसने चाहे डिग्री हासिल की हो या नहीं, सफल व्यवसायी बन जाएगा। अतः पढ़ते समय कॉमर्स की परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लक्ष्य के साथ व्यवसाय की कला सीखने पर भी ध्यान दिया गया है तो उसका जीवन में लाभ मिलना अवश्यंभावी है।

परीक्षाएँ विद्यार्थियों के कुछ ऐसे गुणों का मूल्यांकन भी करती हैं, जिनके अंक परीक्षा परिणाम में अंकित नहीं होते, लेकिन उनका सफलता-असफलता में बहुत बड़ा योगदान होता है। विद्यार्थी के संकल्प, अनुशासन, धैर्य, विवेक, श्रमशीलता, संयम, समय प्रबंधन, तनाव प्रबंधन के अंक परीक्षा परिणाम में कहाँ अंकित होते हैं, लेकिन इन गुणों का उसके परिणामों पर बड़ा गहरा प्रभाव होता है। सच पूछा जाय तो इन गुणों का प्रभाव केवल परीक्षा के परिणाम पर ही नहीं, पूरे जीवन की सफलता पर पड़ता है। अतः विद्यार्थियों को पूरे विद्यार्थी जीवन में इन गुणों को अपने व्यक्तित्व में समाहित करने के लिए सदैव सजग रहना चाहिए।

परीक्षा की तैयारियाँ के दिनों में जहाँ एकाग्रता और कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है, वहीं स्वयं को तनाव और आकांक्षाओं के बोझ से मुक्त रखने के लिए कुशल प्रबंधन का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। दिमाग को स्वस्थ, संतुलित रखने के लिए दिनचर्या में स्वस्थ चिंतन, व्यायाम, विश्राम, मनोविनोद आदि को भी स्थान देना चाहिए। देखा गया है कि इन बातों का ध्यान न रखा जाए तो परीक्षाकाल में विद्यार्थी इतने तनावग्रस्त हो जाते हैं कि जो प्रश्न आते हैं उनका उत्तर देने में भी गड़बड़ी कर बैठते हैं।

तनावरहित रहकर जितना अधिक से अधिक हो सके उतना परिश्रम किया जाना चाहिए। परीक्षा पास आने के दिनों में ही देर तक जगना और मानसिक रूप से थकान अनुभव करते हुए अपनी क्षमताओं को कुंद कर देने में समझदारी नहीं है। उसी प्रकार वर्षभर पढ़ाई पर ध्यान न देकर प्रश्न बैंक जैसे शॉर्टकट पर ही अवलंबित हो जाने से विद्यार्जन का वास्तविक लाभ नहीं मिल पाता।

परम पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि बड़े आदमी नहीं, महामानव बनो। धन और बड़प्पन पाने के लिए तो लोगों को अनेक प्रकार के नैतिक-अनैतिक तरीके अपनाते देखा गया है, लेकिन महानता केवल महान चिन्तन, उदात्त जीवन व सद्गुणों के आधार पर ही पायी जा सकती है। अनैतिकता, अनाचार, भ्रष्टाचार से युक्त जीवन सदैव तनाव, अशान्ति, असंतोष से भरा होता है, जबकि महानता के पथ में अनेक संघर्ष होते हुए भी अथाह संतोष और आनन्द निहित है। पेट-प्रजनन वाला जीवन तो पशु-पक्षी भी जी लेते हैं। परमात्मा ने मानव को वह विशिष्ट विभूतियाँ प्रदान की हैं, जिनके आधार पर वह न केवल स्वयं का, अपितु अनेक लोगों का भला कर सकता है। इस पथ पर आगे बढ़ने वालों के लिए आस्था और विश्वास की प्रबल आवश्यकता होती है। अध्यात्म के अवलम्बन से इन्हें जीवन में प्रगाढ़ किया जा सकता है।

हमारे दायित्व

परीक्षा की घड़ियों में विद्यार्थियों का सही मार्गदर्शन करना, उनमें सफलता के प्रति आत्मविश्वास जगाना, उन्हें सफलता के सूत्र प्रदान करना शिक्षकों, अभिभावकों और बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए संकल्पित हम सभी का नैतिक कर्त्तव्य है। इसके लिए हमें प्रयास अवश्य करने चाहिए।

हम विद्यालयों से सम्पर्क कर विद्यार्थियों का आत्म विश्वास जगाने वाले सूत्र प्रदान कर सकते हैं। अनेक विद्यालय कक्षा 10 और 12वीं के विद्यार्थियों के लिए विदाई समारोहों का आयोजन करते हैं। यह समारोह गायत्री यज्ञों के साथ आयोजित किये जा सकते हैं, ताकि विद्यार्थियों की अपनी क्षमताओं के प्रति, ईश्वर के संरक्षण-आशीर्वाद के प्रति आस्था बढ़े और वे अपनी तैयारियों का बेहतर प्रबंधन कर सकें।

शक्तिपीठों पर, ग्राम स्तर पर या शहरों में वॉर्ड स्तर पर भी ऐसे विशिष्ट यज्ञ, दीपयज्ञ, संगोष्ठियों के आयोजन कर विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रदान की जा सकती हैं।

हमारे इस तरह के प्रयास न केवल विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ायेंगे, उन्हें बेहतर सफलता की ओर अग्रसर करेंगे। यह भारत के भविष्य को आदर्शोन्मुख बनाने का, उनमें आस्तिकता का संचार करने का स्वर्णिम अवसर है। हम समय का लाभ उठायें और नवोदित युवा पीढ़ी में नवयुग के निर्माण का उल्लास जगाएँ, इसी में हमारी समझदारी है। ***

प्रज्ञा परिजनों में छाया मानवता की सेवा-सहायता का उल्लास

प्रचण्ड शीत से बचाव के लिए जरूरतमंदों में कम्बल वितरण

500 कम्बल एवं वस्त्र वितरण

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

जब मनुष्य में भाव संवेदनाओं का जागरण होता है तो वह बरबस ही विभिन्न माध्यमों से जीव को सेवा के पथ पर धकेल देता है। मानव सेवा और त्याग के लिए अलग से किसी प्रयास की आवश्यकता नहीं पड़ती।

ऐसी ही भाव संवेदनाओं से ओतप्रोत युगऋषि के शिष्यों एन.डी.आर.एफ.कमांडेंट श्री मनोज कुमार शर्मा, सुप्रसिद्ध सर्जन डॉ. रोहित गुप्ता और गायत्री शक्तिपीठ,लंका की टोली ने अलग-अलग दिवस पर वाराणसी के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर ठंड से ठिठुरते जरूरतमंदों की सेवा के लिए हाथ बढ़ाए। समाचार प्राप्त होने तक उन्होंने लगभग 500 लोगों में कम्बल वितरण किए। जनवरी प्रथम सप्ताह तक नगर के दशाश्वमेध, दिव्यांग विद्यालय, चांदमारी आदि क्षेत्रों में कम्बल एवं वस्त्र वितरण का कार्य सम्पन्न हुआ। इन्हें पाकर उनके चेहरे की प्रसन्नता व हृदय के आशीष प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होते थे। शक्तिपीठ के आह्वान पर बड़ी संख्या में स्वजनों ने स्वेच्छा से वस्त्रदान किये, जिन्हें जरूरतमंदों तक पहुँचाया गया।

बायें वाराणसी और दायें मनासा में कम्बल वितरण करते गायत्री परिवार के परिजन

मूक बधिर विद्यार्थियों में

इंदौर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ केशरबाग की बहिनों द्वारा आनन्द नगर स्थित डॉ. रेड्डी फाउण्डेशन में शिक्षा ले रहे 40 से अधिक मूक बधिर विद्यार्थियों को कम्बल भेंट किए गए। शक्तिपीठ प्रबंधक श्री सजल तिवारी ने बताया कि भीषण ठंड में विद्यार्थियों की आवश्यकता अनुभव करते हुए शक्तिपीठ ने यह पहल की। मंजूषा उपाध्याय, ममता ठाकुर, रंजना बघेल व माधुरी जाधव ने डॉ. रेड्डी फाउण्डेशन पहुँचकर कम्बल वितरित किए। इन्हें पाकर विद्यार्थियों ने अपनी मुस्कराहट के साथ हाथ हिलाकर खुशी व्यक्त की। फाउण्डेशन की ओर से स्वाती तिवारी ने इसके लिए आभार व्यक्त किया। श्री रविन्द्र कुमार प्रजापति एवं रूपाली पाण्डेय ने सांकेतिक भाषा में गायत्री परिवार के कार्यक्रमों की जानकारी दी।

आदिवासी बहुल गाँव में

मनासा, नीमच। मध्य प्रदेश

कड़ाके की ठंड में ठिठुरते गरीबों की सहायता करते हुए गायत्री शक्तिपीठ मनासा ने 29 दिसंबर को कंबल एवं ऊनी वस्त्रों के वितरण का कार्यक्रम रखा। विभिन्न दानदाताओं से प्राप्त कंबल एवं ऊनी वस्त्रों का वितरण आदिवासी बाहुल गाँव बख्तूनी एवं पोखरदा में किया गया। इन्हें प्राप्त करने वालों के चेहरों पर प्रसन्नता के भाव देख अत्यंत आनन्द की अनुभूति हुई।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान

भारत विकास परिषद के सहयोग से हुआ सम्मेलन

अलीगढ़। उत्तर प्रदेश

दिनांक 8 जनवरी 2023 को एएमयू के प्रोफेसर श्रीमती सोनिया सिंह जी एवं श्री राजेंद्र प्रसाद जी के सौजन्य से ब्रिलिएंट्स पब्लिक स्कूल में भारत विकास परिषद की सुगंधा शाखा एवं गायत्री परिवार के सहयोग से आओ गढें संस्कार वान पीढ़ी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसमें श्रीमती डॉक्टर संगीता सारस्वत, समन्वयक उत्तर प्रदेश के द्वारा गर्भ उत्सव का वैज्ञानिक प्रतिपादन पर एवं डॉ. अमरनाथ सारस्वत के द्वारा यज्ञ का ज्ञान विज्ञान विषय का ओजस्वी ज्ञान प्रदान किया गया। डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी के द्वारा स्वस्थ रहने की दिनचर्या बताई गई।

कार्यक्रम में उप कुलपति राजा महेंद्र प्रताप विश्वविद्यालय, गायत्री परिवार के सभी वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं सुगंधा की बहिनें, डॉक्टर्स, आशा वर्कर्स एवं सीडीपीओ बहनें सम्मिलित हुईं। कार्यक्रम के अंत में श्री अशोक कुमार शर्मा जी के द्वारा गुरुदेव का साहित्य सभी परिजनों को निःशुल्क देकर सम्मानित किया गया।

अलीगढ़ में अभियान को गति दे रही उत्साहित बहिनें आयोजक और अतिथियों के साथ

बंदियों को नशामुक्ति की शपथ दिलाई

बाराँ। राजस्थान

जिला कारागृह बाराँ में आजादी के अमृत महोत्सव के विशेष उपलक्ष्य में नशामुक्ति आंदोलन के अंतर्गत आज आयुर्वेद विभाग एवं गायत्री परिवार के युवा संगठन 'दिया' द्वारा नशामुक्ति कार्यशाला का आयोजन किया गया। गायत्री परिवार की ओर से डॉ. मुकेश मीणा ने इसे सम्बोधित किया। उन्होंने बंदियों से बुराइयों को छोड़ने के लिए अच्छे कार्यों के साथ जुड़ने, नियमित उपासना-साधना करने की प्रेरणा दी। डॉ.हेमराज सेन, डॉ. अनिता गौतम, शंकरलाल सेन, विष्णुप्रसाद गौतम ने भी इसे सम्बोधित किया।

जेलर किशनचंद मीणा ने कहा कि नशा आज समाज की बड़ी समस्या है, जो इंसान को हैवान बना देती है। आपराधिक गतिविधियों में नशा ही बहुत बड़ा कारण है।

कार्यशाला के अंत में बंदियों को नशा छोड़ने और जीवन में अच्छाइयाँ अपनाने की शपथ भी दिलाई गई।

भवानीपटना, कालाहांडी। ओडिशा

7 जनवरी की प्रातः कालाहांडी की गायत्री परिवार शाखा ने भवानीपटना के मुख्य कारागार में गायत्री यज्ञ का आयोजन कर बंदीगणों को जीवन में श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर उन्हें गायत्री उपासना, साधना एवं मंत्र लेखन का महत्त्व समझाया गया। उन्हें बताया गया कि गायत्री उपासना जीवन के दोष-दुर्गुणों से मुक्ति पाने का निरापद उपाय है। गायत्री उपासना से जीवन के कठिन से कठिन प्रारब्ध भी कटते जाते हैं और बुराइयों को छोड़कर सही दिशा में बढ़ने का साहस जागता है।

यज्ञ में सैकड़ों बंदियों ने भाग लिया। कारा अधीक्षक यज्ञ के मुख्य यजमान थे। उन्होंने भी बंदियों को उपासना-साधना करने की प्रेरणा दी। सर्वश्री संतोष कुमार पंडा, तपन कुमार साहू, गणेश पुष्टि, पूर्ण चंद्र नायक आदि ने यज्ञ का संचालन किया।

203 लोगों ने किया रक्तदान

जमशेदपुर। झारखण्ड : युवा प्रकोष्ठ नवयुग दल द्वारा दिनांक 8 जनवरी को अपने रक्तदान के सतत अभियान के अन्तर्गत 51वाँ कार्यक्रम आयोजित किया। नगर के जागरूक जनमानस और समाज के शानदार सहयोग से शिविर को उल्लेखनीय सफलता मिली, कुल 203 यूनिट रक्तदान हुआ।

51 वाँ शिविर

यह शिविर स्व. मुन्ना प्रसाद एवं स्व. फुलझड़ी देवी की पावन स्मृति में श्रीमती मधु गुप्ता एवं उनके परिवार के सौजन्य से शीतला भवन भालूबासा में आयोजित किया गया। एक घण्टे के सामूहिक जप और यज्ञ के उपरांत उपस्थित अनेक गणमान्यो ने दीप प्रज्वलन कर इसका शुभारम्भ किया। उन्होंने रक्तदाताओं का उत्साह बढ़ाते हुए रक्तदान को मानवता की सच्ची सेवा और ईश्वर की सच्ची पूजा बताया। शिविर के संयोजक प्रशांत कालिंदी ने शिविर के अन्त में सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

जमशेदपुर में रक्तदान करते परिजन

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

अलवर के शिविर में शिरोधारा एवं जलनेति करते शिविरार्थी

अलवर। राजस्थान : गायत्री शक्तिपीठ अलवर पर सात दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं पंचकर्म शिविर आयोजित हुआ, जो दिनांक 23 से 29 नवंबर 2022 तक चला। इसका संचालन डॉ. पिंकी सोनी की टीम ने किया। भारतीय योग संस्थान की तरफ से श्रीमती पिंकी गुप्ता, श्रीमती मंजू अग्रवाल ने योग व्यायाम की सेवा प्रदान कीं। समापन दिवस पर वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ. श्रीमती सरोज गुप्ता, श्रीमती ममता गुप्ता एवं महिला मंडल ने सभी सहियोगियों और पधारे हुए अतिथियों का अभिनन्दन किया।

कैंसर जागरूकता कार्यक्रम

अलवर। राजस्थान : इनरव्हील क्लब और गायत्री परिवार के संयुक्त तत्त्वावधान में गाँव की चौपाल प्रोजेक्ट के अंतर्गत पेडी गाँव और लावारी गाँव में कैंसर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित हुआ। लगभग 40 महिलाओं ने इसका लाभ लिया। डॉ. सरोज गुप्ता मुख्य ट्रस्टी गायत्री शक्तिपीठ अलवर ने उन्हें ब्रेस्ट कैंसर व सर्वाइकल कैंसर के बारे में विस्तार से जानकारी दी। लाभार्थी बहिनों को हर तरह के शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य लाभ के लिए बलिवैश्व यज्ञ, गायत्री मंत्र जप-उपासना को दैनिक जीवन का अनिवार्य क्रम बनाने के लिए प्रेरित किया।

इस परिचर्चा में इनरव्हील क्लब की 13 मेंबर्स भी शामिल हुईं। उन्होंने 20 जनवरी को इसी 'गाँव की चौपाल' योजना के अन्तर्गत चार गाँवों में आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान सम्बन्धी जागरूकता कार्यक्रम रखने का आह्वान डॉ. सरोज गुप्ता ने किया।

परिजनों के पुरुषार्थ से दिल्ली में एक और पार्क का नामकरण 'श्रीराम वाटिका' हुआ

पूर्वी दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

दिल्ली में एक और पार्क का नामकरण परम पूज्य गुरुदेव के नाम पर हुआ। चित्रकूट कॉलोनी, एम.आई.जी., डी.डी.ए. फ्लैट, ईस्ट ऑफ लोनी रोड, दिल्ली में नवनिर्मित पार्क संख्या 26 का नामकरण 'श्री राम वाटिका' किया गया है। इसका उद्घाटन 25 दिसम्बर के दिन रोहतास नगर के सांसद माननीय श्री जीतेंद्र महाजन, अशोक नगर की निगम पार्षद श्रीमती रीना माहेश्वरी एवं चेतना केन्द्र, नोएडा के व्यवस्थापक श्री बालरूप शर्मा जी द्वारा किया गया। लावारिस और बदहाल पड़े इस पार्क को श्रीमती अर्चना कुमारी द्वारा संचालित चित्रकूट महिला मंडल की बहिनों ने एक वर्ष के पुरुषार्थ से खूबसूरत बनाया है। इस पार्क में नवग्रह वाटिका, राशि वाटिका, नक्षत्र वाटिका, एक्यूप्रेशर पथ आदि का निर्माण कराया गया है। तकनीकी सहयोग श्री जीतेंद्र प्रज्ञेय, श्री महेश प्रसाद कोरंगा का और गिरीश जी का रहा। श्री अनुज त्यागी का हर प्रकार से विशेष सहयोग रहा।

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

जोबट, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ जोबट एवं संगम हॉस्पिटल बोडेली, अलीराजपुर के तत्त्वावधान में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 325 मरीजों ने चिकित्सा परामर्श लेकर उपचार कराया। इसमें पेट रोग विशेषज्ञ, हड्डी रोग विशेषज्ञ, शिशु रोग विशेषज्ञ, स्त्री रोग विशेषज्ञ सहित कई चिकित्सक और सहायकों ने अपनी सेवाएँ दीं। मरीजों के लिए आवश्यक ई.सी.जी., रक्त परीक्षण व अन्य जाँचों के साथ दवाइयों की भी निःशुल्क व्यवस्था थी। शक्तिपीठ जोबट के व्यवस्थापक डॉ. शिवनारायण सक्सेना, श्री शिवराम वर्मा एवं कई अन्य वरिष्ठ कार्यकर्त्ता तथा ब्लड डोनेशन ग्रुप जोबट के सदस्यों का विशेष सहयोग रहा।

राठौर समाज का विशेष योगदान

श्री कपिल राठौर ने अपने पिता स्वर्गीय श्री रमेश चंद्र राठौड़ की पुण्यतिथि और अपने जन्म दिवस के उपलक्ष्य में इस शिविर में विशिष्ट योगदान दिया था। श्रीमती पुष्पा रमेश चंद्र राठौर के परिवार द्वारा सभी चिकित्सकों को स्मृति चिह्न भेंट किए गए। राठौर समाज जोबट के पदाधिकारियों एवं परिजनों ने कार्यक्रम की प्रशंसा करने हुए इसे पीड़ित मानवता की सेवा में किया गया अत्यंत पुनीत कार्य बताया।

छत्तीसगढ़ के परिजनों में नवउल्लास जगाने पहुँचीं श्रद्धेया शैल जीजी

रजत जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित 151 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में हजारों श्रद्धालुओं को गायत्री महामंत्र की दीक्षा दिलाई

भिलाई, दुर्ग। छत्तीसगढ़

यज्ञ जीवन का श्रेष्ठतम कर्म है। यज्ञमय जीवन में रुचि रखने वाले आस्थावान मनुष्यों को चाहिए कि वे जीवन लक्ष्य की पूर्णता की दिशा में निरंतर अग्रसर रहें। मात्र मनुष्य से ही यह अपेक्षा की जाती है कि वह पशुता की ओर न बढ़े, हीन प्रवृत्तियों से बचे तथा जीवन में देवत्व का सतत अभिवर्धन करता रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ 27 से 30 दिसम्बर 2022 की तिथियों में सेक्टर-7 भिलाई के दशहरा मैदान में आयोजित 151 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ अपार उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। यह महायज्ञ अश्वमेध यज्ञ भिलाई के रजत जयंती समारोह के रूप में आयोजित किया गया था। यज्ञ की पूर्णाहुति में लगभग 20 हजार गायत्री साधक एवं गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया। यज्ञ संचालन शान्तिकुञ्ज से आई श्री श्यामबिहारी दुबे जी की टोली ने किया।

महायज्ञ के अंतिम दिन करोड़ों लोगों की आस्था का केन्द्र श्रद्धेया शैल जीजी, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी, आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी का देवमंच पर उपस्थिति होना अपने आप में युगदेवता की प्रसन्नता और महायज्ञ की सफलता का सूचक था। उनकी सत्प्रेरणा और शुभाशीषों ने पूरे छत्तीसगढ़ के प्राणवान कार्यकर्त्ताओं की श्रद्धा-भावना का भरपूर पोषण किया। सभा में उपस्थित लगभग 10,000 साधक-श्रद्धालुओं ने श्रद्धेया शैल जीजी के श्रीमुख से गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली।

अश्वमेध महायज्ञ भिलाई के रजत जयन्ती समारोह में जनमानस को अनुप्राणित करने पहुँची श्रद्धेया शैल जीजी, आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं आदरणीया शेफाली जीजी

आत्मज्योति जगाता दीपयज्ञ

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने दीपयज्ञ में उपस्थित 5000 श्रद्धालुओं के विशाल जनसमूह को संबोधित किया। उन्होंने गुरु और भगवान की कृपा पाने के लिए छोटी-मोटी भेंट-पूजा और गुणगान की अपेक्षा जीवन देवता की साधना-आराधना करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि ईश्वर तो न्यायनिष्ठ और विवेकवान है। व्यक्ति के व्यक्तित्व में प्रभु के प्रति जो गरिमा व श्रद्धा उभरती है, उसी के आधार पर वे प्रसन्न होते हैं और अपने शिष्यों को अनुदान देते हैं।

शानदार सफलता के शिल्पी

आयोजन में शांतिकुंज से जोन समन्वयक शुकदेव निर्मलकर, रामावतार पाटीदार, पुष्कर, विवेक एवं मीडिया टीम, शान्तिकुञ्ज से आई श्री श्याम बिहारी दुबे जी की टोली के साथ छत्तीसगढ़ जोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा, सांसद विजय बघेल, डॉ. दयाराम साहू, रामशिला साहू, एस.पी. सिंह, धीरज लाल टाँक, वी.पी. सिंह, डॉ. पी.एल. साव, योगेन्द्र साहू, वाय के साहू, अनिता साहू , लोकनाथ साहू, मोहन उमरे, अलख राम नायक सहित अंचल के गायत्री परिवार के सभी कार्यकर्त्ताओं का सहयोग रहा।

भिलाई से होगा पूरे विश्व का भला

- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

परम पूज्य गुरुदेव ने हिंदुस्तान में अगर सबसे ज्यादा किसी स्थान का दौरा किया है तो वह है माता कौशल्या की भूमि, छत्तीसगढ़ की पावन धरा भिलाई। वे कहा करते थे कि बेटा छत्तीसगढ़ तो मेरा हृदय है और मेरे इस हृदय के मध्य में भिलाई बसता है। भिलाई इस्पात संयंत्र में बनने वाली रेल की पटरियाँ आज की तारीख में 11 बार पूरी पृथ्वी को लपेट सकती हैं। जब भिलाई की रेल पटरी इतनी लंबी व मजबूत है तो भिलाई के हमारे गायत्री परिजन गुरुदेव के कार्यों के लिए पूरी पृथ्वी की 22 परिक्रमा कर सकते हैं। मैं तो कहता हूँ कि इस भिलाई से ही पूरे विश्व का भला होने वाला है। यहाँ से गायत्री रूपी माँ गंगा की जो धारा बह रही है, वह रुकेगी नहीं।

आप भगवान के पार्षद हैं।

- श्रद्धेया शैल जीजी

युग निर्माण की महान योजना में अपनी श्रद्धा-भावनाओं की आहुतियाँ देने वाले आप सब लोग भगवान के पार्षद हैं। भगवान निराकार हैं। जिन कार्यों में ज्ञानेंद्रिय और कर्मेन्द्रियों की आवश्यकता होती है, ऐसे कार्य वे अपने पार्षदों से कराते हैं। पार्षद का अर्थ होता है 'निकटवर्ती'। जो ईश्वर की दिव्य विभूतियों को जितनी अधिक मात्रा में अपने भीतर धारण कर पाता है, वह उसी मात्रा में भगवान का निकटवर्ती या यूँ कहें कि उनकी कृपा का पात्र बन जाता है।

गुरु कोई व्यक्ति नहीं, वह शक्ति है जो अपने सत्पात्र शिष्यों को दीनता और हीनता से उबारकर महानता प्रदान करती है। गुरुकृपा से दुर्दांत दैत्य अंगुलिमाल भगवान बुद्ध का अनन्य शिष्य बन जाता है। अनगढ़ युवक नरेन्द्र स्वामी विवेकानन्द बनकर सारे विश्व का पथ प्रदर्शन करता है। सद्गुरु की कृपा से ही संत कबीर, महात्मा गाँधी, महामना मदनमोहन मालवीय, स्वामी श्रद्धानंद, हीरालाल जैसे लोकसेवी महामानव गढ़े जाते हैं। गुरुकृपा पाने की यह पात्रता जीवन साधना और समर्पण की भावना से ही प्राप्त होती है।

देवदूत को पहचानो

परम पूज्य गुरुदेव वह महान दैवीय चेतना है जो सारी धरती के भाग्य और भविष्य का निर्धारण कर रही है। वे देवदूत बन कर आये और हम पहचान नहीं पाए, इसमें गुरु का दोष नहीं, हमारी पात्रता में कमी थी। आज फिर से गुरु को जानने, उन्हें पहचानने का सही समय है। हमारे गुरु में वह शक्ति है कि वह हमें ईश्वर के समीप बैठा सकते हैं। यह दीक्षा के अनुशासन-अनुबंधों का पालन करने से ही संभव है।

हीरा बा के जीवन-आदर्शों को नमन

डॉ. चिन्मय जी द्वारा हीरा बा को पुष्पांजलि एवं श्री पंकज भाई से चर्चा

अहमदाबाद। गुजरात : गुजरात प्रवास पर गए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 12 जनवरी को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी की माँ श्रीमती हीरा बा को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने उनके घर पहुँचे। उन्होंने श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी सहित अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से शतायु पूरी करने वाली दिव्य आत्मा के उदात्त जीवन-आदर्शों को नमन करते हुए अपनी पुष्पाञ्जलि अर्पित की। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी के भाई श्री पंकज मोदी से उनकी चर्चा हुई। डॉ. पण्ड्या जी ने कहा कि आज राष्ट्र को जैसी वीरांगनाओं की आवश्यकता है, ऐसी नारी शक्ति का आदर्श थीं हीरा बा। इस दिशा में नारी सशक्तीकरण वर्ष में गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी भी श्री पंकज भाई को दी। इस अवसर पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ अपनी मुलाकात की यादें भी ताजा कीं।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' गायत्री परिवार की सक्रियता का मूल मंत्र है। हर परिवार के साथ आत्मीयता विस्तार हमारा प्रयास है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी जहाँ भी जाते हैं, वहाँ आत्मीय परिजनों के संग अपनी संवेदनाएँ साझा करना नहीं भूलते। इसी भाव के साथ वे हीरा बा को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने पहुँचे थे।

शताब्दी महोत्सव में पहुँचकर दी प्रमुख स्वामी महाराज को श्रद्धाञ्जलि

अहमदाबाद। गुजरात : देसंविवि. के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अपने गुजरात प्रवास के समय अहमदाबाद में मनाए जा रहे बीएपीएस (बाप्स) के प्रमुख स्वामी जी महाराज के शताब्दी समारोह में पहुँचे। वहाँ उन्होंने वर्तमान में स्वामीनारायण सम्प्रदाय का नेतृत्व कर रहे गुरुहरि महंत स्वामी महाराज से भेंट कर अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से अपनी सद्भावना और शुभकामना व्यक्त की।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने गुरुहरि महंत स्वामी महाराज को परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट करते हुए उन्हें नमन किया, उन्हें श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया जीजी की ओर से शुभकामना संदेश दिया। इससे पूर्व वहाँ सेवा दे रहे वरिष्ठ संतों ने डॉ. चिन्मय जी का मेला परिसर में भावभरा स्वागत किया। प्रमुख स्वामी जी से भेंट और वहाँ उपस्थित भक्तगणों को संदेश देने के बाद वरिष्ठ संतों ने आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं साथ गए गायत्री परिवार के समस्त प्रतिनिधियों को पूरे मेला परिसर का भ्रमण कराते हुए प्रमुख स्वामी जी के व्यक्तित्व, उनके कृतित्व तथा वर्तमान में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी।

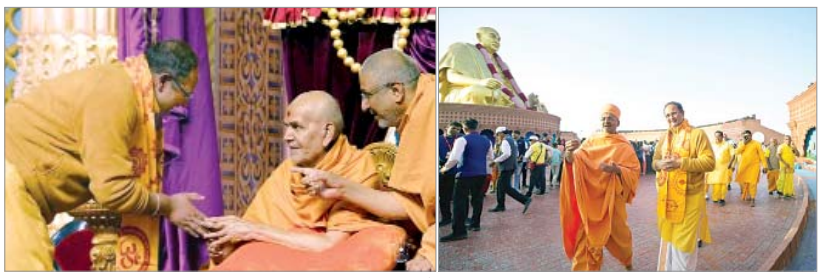

आद. डॉ. चिन्मय जी महंत स्वामी जी महाराज को प्रणाम करते हुए तथा नगर भ्रमण करते हुए

गुजरात सरकार के चार मंत्रियों से भेंट-वार्ता

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने गाँधीनगर में गुजरात सरकार में मंत्री डॉ. श्री कुबेरभाई मनसुखभाई डिण्डोर, श्री कनुभाई मोहनलाल देसाई, श्री राघवजीभाई हंसराजभाई पटेल तथा श्री कुवरजीभाई मोहनभाई बावलीया से भेंट की। उन्होंने सभी मंत्रियों को परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया। गायत्री परिवार द्वारा समाज के नवोन्मेष के लिए किए जा रहे कार्यों की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि गुजरात में गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता सच्चरित्र, सद्गुणी नागरिकों के निर्माण हेतु अद्वितीय कार्य कर रहे हैं।

शताब्दी महोत्सव में शान्तिकुञ्ज का संदेश

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा-

आज प्रमुख स्वामी महाराज के शताब्दी समारोह में होकर मैं और गायत्री परिवार का हर कार्यकर्त्ता स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है। आज स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती, प्रमुख स्वामी का शताब्दी समारोह और गायत्री परिवार की उपस्थिति, ये तीनों धाराओं का मिलन एक संकल्प लेकर आया है कि हममें से प्रत्येक को भारत को भारतीय संस्कृति को जगाने के लिए, बेहतर बनाने के लिए आगे आने की आवश्यकता है। यह समय भारत की आध्यात्मिक चेतना के विकास का समय है।

जो बीत गया उसके पछतावे और भविष्य की चिन्ता छोड़ वर्तमान का सदुपयोग करके भी हम नश्वर जीवन में से भी कुछ अनश्वर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। – महायोगी अरविंद

ज्ञानयज्ञ योजना प्रयागराज 50,000

(अच्छे, चरित्रवान नागरिकों को गढ़ने और भटकों को दिशा देने का एक महान प्रयोग)

संयोजक : **श्री देवब्रत साहा राय, प्रयागराज-मोबाइल** : 7007122798, **व्हॉट्सएप** : 9415638196

ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित तथा सभ्य समाज के निर्माण हेतु उदारतापूर्वक सहयोग देने वाले महानुभाव इस योजना को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए अपना सहयोग अवश्य प्रदान करें। नैष्ठिक परिजन ऐसे महानुभावों को सहयोग के लिए प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना।

सहयोगियों का नाम अधोलिखित सूची में प्रकाशित किया जाएगा।

परम पूज्य गुरुदेव की आकांक्षा : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने बार-बार आह्वान किया है कि विचार क्रान्ति ही इस युग की व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक सभी समस्याओं का एक मात्र समाधान है। सद्विचारों के प्रकाश से जनमानस को आलोकित कर लोगों के जीवन में आ रहे भटकाव को दूर किया जाना है, वहीं सच्चरित्र, आस्थावान और राष्ट्रभक्त नई पीढ़ी का निर्माण किया जाना है। युगऋषि की आकांक्षा के अनुरूप सद्ज्ञान के प्रकाश को जरूरतमंदों तक पहुँचाने का यह एक नेक प्रयास है।

योजना के लाभार्थी : 200 कारागार, 1450 विद्यालय, 100 ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित कार्यकर्त्ता

इस योजना के अन्तर्गत 1750 स्थानों में 50,000 लोगों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाया जा रहा है। यह पाक्षिक समाचार पत्र है, वर्ष में 24 बार लोगों तक सद्ज्ञान और सुविचारों की गंगा उन तक पहुँचती है।

5 राज्यों के 1450 इण्टर कॉलेज (उच्च माध्यमिक विद्यालय) में प्रत्येक में 25 प्रज्ञा अभियान, 200 केन्द्रीय कारागार एवं जिला कारागारों में प्रत्येक में 50 तथा ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित 100 कार्यकर्त्ताओं तक यह प्रज्ञा अभियान पहुँच रहा है।

40 लाख रुपये की योजना : उदारतापूर्वक सहयोग कीजिए

यह 40 लाख रुपये (50,000 x ₹ 80/-) वार्षिक की योजना है, जो समाज के नवनिर्माण के लिए उदारतापूर्वक सहयोग करने वाले दानदाताओं, ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित उदारमना परिजनों के सहयोग से चलाई जा रही है। देश के अनेक लोग सामाजिक उत्कर्ष के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं को दान देते हैं। अनेक परिजन गायत्री परिवार की ब्रह्मभोज योजनाओं में सहयोग करते हैं। जगह-जगह सार्वजनिक यज्ञीय आयोजन होते हैं, जिनमें बड़ी मात्रा में धन खर्च होता है। इन यज्ञ के आयोजकों को ज्ञानयज्ञ के इस महान अभियान में भी सहयोग अवश्य करना चाहिए।

अपनी सहयोग राशि सीधे शान्तिकुञ्ज के खाते में जमा कराएँ

- सहयोग राशि सीधे शान्तिकुञ्ज के बैंक खाते में ऑनलाइन जमा कराएँ और रसीद प्राप्त कर लें। बैंक खाता नम्बर प्राप्त करने के लिए व्हॉट्सएप नम्बर 9258369413 पर सम्पर्क किया जा सकता है।
- बैंक खाते में धनराशि जमा कराने के बाद उसकी सूचना ई-मेल से शान्तिकुञ्ज को देना आवश्यक है। यह धनराशि 'प्रयागराज 50,000' के खाते में जमा कराई जा रही है, यह जानकारी देना भी आवश्यक है अन्यथा भेजी गई धनराशि अन्य मद में जमा कर दी जाती है।
- अपनी धनराशि जमा कराने सूचना 'प्रयागराज 50,000' योजना के संचालक श्री देवब्रत साहा राय को भी फोन/व्हॉट्सएप 9415638196 से देने की कृपा करें, ताकि इस योजना के लिए आवश्यक 40 लाख रुपये की धनराशि का हिसाब रखा जा सके।

अधिक जानकारी के लिए ऊपर दिए गए मोबाइल/व्हॉट्सएप नम्बरों पर सम्पर्क किया जा सकता है।

प्रमुख सहयोगी सौजन्यकर्त्ता महानुभाव

(1) डॉ. सुनीत कुमार, एम.डी (वरिष्ठ रेडियोलॉजी), संचालक : प्रज्ञा स्कैनिंग सेण्टर, जॉर्ज टाउन प्रयागराज(उ.प्र.)
(2) श्रीमती ऋतु सुनीत कुमार, जॉर्ज टाउन, प्रयागराज (उ.प्र.)
(3) श्रीमती गिन्नी मित्तल, जॉर्ज टाउन, प्रयागराज (उ.प्र.)
(4) श्रीमती रश्मि जायसवाल, टैगोर पब्लिक स्कूल, प्रयागराज (उ.प्र.)
(5) डॉ. वी.पी. सिंह, विभागाध्यक्ष, पशुपालन और पशु चिकित्सा विज्ञान, रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)
(6) श्रीमती दीपा सिंह, झाँसी (उ.प्र.)
(7) श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव, प्रीतम नगर, प्रयागराज (उ.प्र.) (अपने माता-पिता की स्मृति में)
(8) श्री वेद प्रकाश चैतन्य-जी.एम., ओएनजीसी, मुम्बई, पिता स्व. द्वारिका प्रसाद चैतन्य, पूर्व व्यवस्थापक, गायत्री तपोभूमि, मथुरा की स्मृति में
(9) श्रीमती सुनीता सिंह, रेलगाँव, सूबेदार गंज, प्रयागराज (उ.प्र.) (अपने माता-पिता की स्मृति में)
(10) श्री संजय कुमार गुप्ता (से.नि. वरिष्ठ बैंक अधिकारी), त्रिवेणीपुरम, झूँसी, प्रयागराज (उ.प्र.) (अपने माता-पिता की स्मृति में)
(11) श्रीमती ममता वर्मा, पी.जी.आई. कॉलोनी, रायबरेली रोड़, लखनऊ (उ.प्र.)
(12) सुश्री रेनू वर्मा, सचिव, मण्डी समिति, लखनऊ (उ.प्र.) (नानी स्व. सोनापति वर्मा, पटेल मार्केट, बाराबंकी की मधुर स्मृति में)
(13) श्री दिनेश कुमार-सहायक कुलसचिव, बुन्देलखण्ड विवि., झाँसी (उ.प्र.)
(14) श्री जगदीश चंद्र जोशी, इलाहाबाद विव. (वनस्पति विज्ञान विभाग), ओम गायत्री नगर, प्रयागराज (उ.प्र.)
(15) सुश्री पूर्णिमा कुमारी, सजल श्रद्धा महिला मण्डल, विश्नापुरी कॉलोनी, पोंगहट, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
(16) श्री हरेराम सिंह (एस.बी.आई. लूकरगंज), विश्नापुरी कॉलोनी, पोंगहट, प्रयागराज (उ.प्र.) (चाचा स्व. देवनाथ सिंह की स्मृति में)
(17) 'परीमाता गायत्री यज्ञ समिति' शेखपुर, बाराबंकी (उ.प्र.)
(18) इं. श्री एल. बी. सिंह (भूतपूर्व सूबेदार मेजर) आर.डी.एस.ओ., लखनऊ (अपने माता-पिता की स्मृति में)
(19) श्री बैजनाथ वर्मा, गायत्री ज्वेलर्स, चाका ब्लॉक, सी.ओ.डी. रोड, नैनी, प्रयागराज (उ.प्र.)
(20) श्री देवव्रत साहा राय, प्रीतम नगर, प्रयागराज (अपने माता-पिता की स्मृति में)

प्रयागराज 50,000 अन्य सहयोगी महानुभाव

1. सुश्री नम्रता सिंह, पुत्री डॉ. विजेन्द्र पाल सिंह, बैंगलुरू (कर्नाटक)
2. श्री शिवनारायण, गाँव खाले का पुरवा, पो. बरौली मलिक, बाराबंकी (उत्तर प्रदेश) (माता स्व. रामराजा की पुण्य स्मृति में)
3. श्री पोखन सिंह ठाकुर, पो. शाजा, जिला बेमेतरा (छ.गढ़)
4. श्री मोहित राम देवांगन, पो. मलहार वाया मस्तुरी, जि. बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
5. श्रीमती निर्मला पाण्डे, जी-176, साउथ सिटी, रायबरेली रोड, लखनऊ (उ.प्र.)
6. श्री जयप्रकाश कुशवाहा, ग्राम पूरे ब्लदू, पो. दुबाहा, जि. प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
7. श्रीमती विमला शर्मा, डी-303 ओल्ड मिनल, अयोध्या बाईपास रोड, गोविन्द पुरा, भोपाल (मध्य प्रदेश)
8. श्री लाला प्रसाद साहू, पो. बल्गी, गायत्री प्रज्ञापीठ बल्गी, कोरबा (छत्तीसगढ़)
9. कु. अनामिका राय, डी-103, सनशाइन रॉयल रेसिडेंसी, प्रीतमनगर, प्रयागराज
10. श्रीमती सरोज वर्मा, ग्राम गौहरिया, जिला देवरिया (उ.प्र.)
11. सुश्री निर्मला देवी, चक मुण्डेरा, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
12. सुश्री मीना सिंह, ई.डब्ल्यूएस-141, ए.डी.ए. कॉलोनी, नीम सराय, प्रयागराज
13. श्री विनीत सिंह, 1बी/6/11डी, अबुबकरपुर, धूमनगंज, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
14. श्री शरद कुमार श्रीवास्तव, 1 वाय/2जेड, पुष्पम आवास योजना, गयाशुद्दीनपुर, नीम सराय, मुण्डेरा, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
15. श्री अर्जुन देव मुंजाल, म.न. 760, सेक्टर 9ए, ई.एस.आई. अस्पताल के निकट, गुरुग्राम (हरियाणा)
16. श्री जयशंकर सिंह, निरीक्षक उ.प्र. पुलिस, एल.आई.यू., पुलिस अधीक्षक कार्यालय, रायबरेली (उत्तर प्रदेश) (अपने माता-पिता की स्मृति में)
17. श्री रामदेव यादव, वरिष्ठ साधक, 702, महेन्द्र नगर, टी.पी. नगर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
18. श्री डी.आर. बघेल, दन्तेवाड़ा (छत्तीसगढ़)
19. श्रीमती अर्चना शर्मा, से.नि. प्रोफेसर, लखनऊ (उ.प्रदेश)
20. श्री अशोक कुमार विश्वकर्मा, ओरछा, निवाड़ी (मध्य प्रदेश)
21. श्री पूरन सिंह नाग, ग्राम आँव२1 भाटा, पो. दन्तेवाड़ा, जि. दन्तेवाड़ा (छत्तीसगढ़)
22. श्री अजीत देशवाल, ए ब्लॉक, सेक्टर-48, सोहना रोड़, ग्ररुग्राम (हरियाणा)
23. श्री अनिल कुमार चौधरी, ई.डब्ल्यू.एस.-164 ए.डी.ए. कॉलोनी, नीम सराय, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

इस योजना के लिए अनुदान निम्न खातों में ऑनलाइन जमा किया जा सकता है।
बैंक खाते का नाम - श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी)
पंजाब नेशनल बैंक : 469 4002 1000 00572 (16 डिजिट) IFSC Code: PUNB0469400
एक्सिस बैंक : 914 0200 3171 1542 (15 डिजिट) IFSC Code: UTIB0000156
एचडीएफसी बैंक : 094 3145 0000 037 (14 डिजिट) IFSC Code: HDFC0000943
इनमें से किसी भी खाते में पत्रिका सदस्यता शुल्क जमा करने के बाद भुगतान पत्र की कॉपी पत्र या मोबाइल से ई-मेल (pragyaabhiyan@awgp.in) द्वारा शान्तिकुञ्ज को भेज दीजिए। साथ में भेजने का प्रयोजन और अपना पता भी अवश्य लिखकर भेजें।

आँवलखेड़ा क्षेत्र के विद्यालयों में विचार क्रान्ति का शंखनाद

आँवलखेड़ा, आगरा। उत्तर प्रदेश

परम पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि आस्था संकट अपने समय का सबसे बड़ा संकट है और विचार क्रान्ति अभियान इस संकट का एकमात्र समाधान है। जनमानस में श्रद्धा, सृजनात्मकता, सकारात्मकता के भाव विकसित करना आज समाज और राष्ट्र की सबसे बड़ी सेवा है।

जन्मभूमि आँवलखेड़ा में गायत्री शक्तिपीठ के व्यवस्थापक श्री घनश्याम देवांगन ने कहा कि इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए आँवलखेड़ा के आसपास के गाँवों में अनेक अभियान चलाए गए। इन दिनों 15-20 किलोमीटर के क्षेत्र में आने वाले सभी विद्यालयों में पुस्तक मेलों का आयोजन किया जा रहा है। ज्ञानरथ (ईको वाहन) के माध्यम से इन विद्यालयों में ब्रह्मभोज (आधी कीमत) में यह साहित्य बच्चों को उपलब्ध कराया जाता है। इन विद्यालयों के पुस्तकालयों में भी युगसाहित्य की स्थापना की जा रही है।

समाचार प्राप्त होने तक आँवलखेड़ा के आसपास के 37 विद्यालयों में पुस्तक मेले लगाए जा चुके थे। अब देव संस्कृति विश्वविद्यालय के परिवीक्षाधीन विद्यार्थियों की टोली पहुँच जाने से अभियान को और भी गति मिलेगी। वे विद्यार्थियों के लिए उपयोगी तरह-तरह के कार्यक्रम सम्पन्न कराएँगे और पुस्तक मेलों के प्रति भी विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करेंगे।

अखण्ड ज्योति पाठक सम्मेलन

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ लंका के दिव्य प्रांगण में 25 दिसम्बर को अखंड ज्योति पाठक सम्मेलन एवं सम्मान समारोह संपन्न हुआ। महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय के वित्त नियंत्रण आ. संतोष शर्मा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि बाल्यकाल से मिले अखंड ज्योति के सानिध्य ने हमारे जीवन को सुदृढ़ बनाया है। आज आवश्यक है कि अखंड ज्योति पत्रिका से हर युवा को जोड़ा जाए।

शक्तिपीठ के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी व वाराणसी के सुप्रसिद्ध सर्जन डॉ. रोहित गुप्ता ने सम्मेलन में बड़ी संख्या में पाठकों की उपस्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त की। सभी परिजनों ने एक मत से अखण्ड ज्योति की सदस्यता को एक अभियान बनाने का संकल्प लिया। उल्लेखनीय है कि शक्तिपीठ लंका द्वारा लगभग 4000 अखंड ज्योति एवं 1800 युग निर्माण योजना मँगाई जाती हैं।

परमात्मा निष्काम भाव से सभी से प्रेम रखता है, हम भी परस्पर प्रीतिपूर्वक रहें। - अथर्ववेद 19/62/1

नारी सशक्तीकरण चेतना शिविर, रायपुर (छत्तीसगढ़) में नारी शक्ति के गौरव की अनुपम झाँकी

दिनांक 27 से 29 दिसम्बर 2022 की तिथियों में रायपुर में सम्पन्न नारी सशक्तीकरण चेतना शिविर छत्तीसगढ़ में नारी सशक्तीकरण के लिए हो रहे प्रयासों की अनुपम झाँकी देखने में मिली। इस कार्यक्रम में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि शेफाली जीजी ने तीनों दिन रहकर बहिनों की टोली का नेतृत्व किया। इसकी कुछ ऐसी विलक्षण स्मृतियाँ थीं, जिन्हें स्मरण कर हृदय पुलकित हो जाता है। इनकी छाप लम्बे समय तक कार्यकर्त्ताओं में उत्साह और सृजन संकल्पों का संचार करती रहेगी। विस्तृत समाचार तो गत अंक में पृष्ठ 3 पर प्रकाशित हो चुके हैं, लेकिन कुछ विशिष्ट घटनाएँ ऐसी हैं जो अविस्मरणीय थीं, जिनका उल्लेख उस समाचार में नहीं हो सका था। जैसे-

- आदरणीया शेफाली जीजी द्वारा ध्वजारोहण के समय और मंच पर पहुँचने पर 24 बहिनों द्वारा शंखनाद से स्वागत करना।
- श्रद्धेया शैल जीजी का हवाई अड्डे से मंच तक स्वागत।
- समारोह स्थल पर रंगोली से बनाया गया श्रद्धेया जीजी का जीवंतता की अनुभूति कराने वाला चित्र।
- मंच से छत्तीसगढ़ के प्रान्तीय गीत का गायन, आदि।

शिविर की व्यवस्था में गायत्री परिवार ट्रस्ट रायपुर का महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिनमें जोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा, डॉ.कुन्ती साहू, श्याम बैस, सदाशिव हथमल, दीनानाथ शर्मा, शान्तिकुञ्ज जोन प्रभारी शुकदेव निर्मलकर, चम्पेश्वर साहू, पीताम्बर साहू, डी.आर.चैहान, नंदलाल साहू, जगमोहन चंद्राकर, मोहित कुरूवंशी आदि शामिल हैं।

रायपुर के शिविर में आदरणीया शेफाली जी के नेतृत्व में कार्यक्रम संचालन करती शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी टोली, रंगोली से बनाया श्रद्धेया शैल जीजी का चित्र, कार्यक्रम का ध्वजारोहण के साथ शुभारंभ और कर्मठ कार्यकर्त्ता बहिनों का सम्मान

दिल्ली में यज्ञ के प्रति बढ़ती आस्था

निरंतर चल रही है पंच कुण्डीय व घर-घर यज्ञ की श्रृंखला

बृजपुरी, दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी

उत्तर पूर्वी, दिल्ली स्थित बृजपुरी में गायत्री परिवार ने 1 जनवरी 2023 को 5 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ नववर्ष का स्वागत किया। इस कार्यक्रम में भारतीय संस्कृति के प्रति लोगों में निरन्तर बढ़ती आस्था के दर्शन हुए। यज्ञ में भाग लेने वालों की संख्या इतनी ज्यादा थी कि कुल 7 पारी यज्ञ हुआ, समयाभाव के कारण अन्यों ने भावनात्मक आहुतियाँ ही समर्पित की।

यह यज्ञ गायत्री चेतना केंद्र नोएडा के व्यवस्थापक श्री बालरूप शर्मा के मार्गदर्शन में इंद्रपाल आर्य जी की टोली ने कराया। यज्ञ में 24 दीक्षा, 11 विद्यारंभ एवं 2 पुंसवन संस्कार हुए। महिला मंडल की संयोजिका श्रीमती विमला गिरी, सर्वश्री सोमदत्त गिरी, ब्रह्मपाल गिरी, सुशील शर्मा एवं मास्टर विनोद शर्मा ने आयोजन में अहम भूमिका निभाई।

बृजपुरी में चल रहा पंच कुण्डीय यज्ञ

श्री इंद्रपाल आर्य ने बताया कि नववर्ष के उपलक्ष्य में दक्षिण पश्चिम दिल्ली के नजफगढ़ में भी पंच कुण्डीय यज्ञ तथा 101 स्थानों पर एक कुण्डी गायत्री यज्ञों का आयोजन सम्पन्न हो चुका है।

झुग्गी बस्तियों में बच्चों की जिन्दगी सँवार रही बाल संस्कार शाला को समाज से भरपूर प्रोत्साहन मिला

बठिंडा। पंजाब

धोबिआना बस्ती बठिंडा शहर का एक स्लम एरिया है, जहाँ 200 परिवार रहते हैं। स्थानीय गायत्री परिवार इस बस्ती में सन् 2017 से बाल संस्कार शाला चलाकर इन बच्चों को सद्गुणी, संस्कारवान बना रहा है। इस क्षेत्र में श्री घनश्याम शर्मा के घर में चल रही इस संस्कार शाला में बस्ती के लगभग 100 बच्चे प्रतिदिन सायं 4 से 6 बजे तक गायत्री परिवार की कक्षाओं में आते हैं। श्री गणेश दत्त शर्मा और अभियंता श्री टेक चंद गोयल के पावन पुरुषार्थ का सुपरिणाम ही है कि बाल संस्कार शाला के बच्चों ने नगर ही नहीं, पूरे क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बना ली है। इन बच्चों को बाल संस्कार शाला में गायत्री मंत्र, चालीसा, वंदना, योग, सेवा, संस्कार तो सिखाया ही जाता है, गायत्री परिवार की प्रेरणा और प्रोत्साहन से सभी बच्चे स्कूल भी अनिवार्य रूप से जाते हैं।

श्री गोयल ने बताया कि बाल संस्कार शाला के 11 बच्चों की ऐसी प्रतिभावान टोली विकसित हो गई हैं, जो डफली पर प्रज्ञागीतों से वातावरण को अत्यंत भावपूर्ण बनाते हुए बड़ी कुशलता के साथ यज्ञ कराती है। इन बच्चों ने अपने क्षेत्र में कई बार नशा निवारण रैली निकालकर लोगों के मन-मस्तिष्क को झकझोरा है।

समाज में नई पहचान बना रहे हैं बाल संस्कार शाला के बच्चे

गणमान्यों से मिला सम्मान और सहयोग

योग दिवस पर राजेंद्रा कॉलेज बठिंडा में आयोजित कार्यक्रम में जिला कलेक्टर ने इन बच्चों को सम्मानित किया। 12 नवम्बर 2022 को जिला जज महोदय सपत्नीक बाल संस्कार शाला के बच्चों से मिलने आए। इससे पूर्व सी.जे.एम. श्री सुरेश गोयल भी बच्चों को आशीष देने आ चुके हैं। समय-समय पर शहर के कई गणमान्य बच्चों के उत्साहवर्धन के लिए आते हैं। बहुत से लोग इन बाल संस्कार शाला के बच्चों के बीच आकर अपने बच्चों का जन्मदिन मनाने में गौरव की अनुभूति करते हैं। इन बच्चों की प्रतिभा को निखारने में उन सबके पूरे सहयोग का आश्वासन मिलता है।

बठिंडा की इस बाल संस्कार शाला को विगत अप्रैल माह में शान्तिकुञ्ज के शैक्षिक प्रवास पर भी लाया गया था।

यज्ञ की उत्कृष्ट परम्परा से नववर्ष का स्वागत

वैज्ञानिकों की नगरी में वर्ष पूर्णाहुति महोत्सव-2022

मुम्बई। महाराष्ट्र

दिया, अणुशक्तिनगर विगत कई वर्षों से बीतते वर्ष की विदाई दीपयज्ञ के साथ करता आया है। इस वर्ष यह उत्सव एवरेस्ट भवन में मनाया गया, जिसमें कई वैज्ञानिकों के परिवार और गायत्री परिवार के समर्पित कार्यकर्त्ता शामिल हुए।

यह दीपयज्ञ वैश्विक परिदृष्य में व्याप्त भय, चिंता और अनिश्चितताओं के बीच हर किसी को आत्मिक उल्लास प्रदान कर अलौकिक शान्ति का अनुभव कराने वाला था। भक्तिभावपूर्ण प्रज्ञा गीतों ने ईश कृपा की अनुभूतियाँ कराईं। प्रज्वलित दीपों के सान्निध्य में गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र से भाव आहुतियाँ प्रदान करते हुए सभी अपने अंतःकरण को प्रकाशित होता अनुभव कर रहे थे।

उपस्थित समस्त श्रद्धालुओं को जीवन की श्रेष्ठता के लिए एक लघु गायत्री अनुष्ठान करने की प्रेरणा दी गई। अश्वमेध यज्ञ, मुम्बई में भागीदारी का सौभाग्य प्राप्त करने का आमंत्रण दिया गया। युग साहित्य के वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

अणुशक्ति नगर, मुम्बई में दीपयज्ञ के साथ दी गई वर्ष 2022 को विदाई

अश्वमेध यज्ञ का प्रयाज

21 कुंडीय गायत्री यज्ञ

ठाणे, मुम्बई। महाराष्ट्र : इन दिनों मुंबई अश्वमेध यज्ञ के प्रयाज क्रम में गायत्री महायज्ञों की श्रृंखला चलाई जा रही है। इसी क्रम में गायत्री परिवार ठाणे द्वारा दिनांक 30 दिसंबर से 1 जनवरी तक ठाणे के आनंद नगर में 21 कुंडीय गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। सेंधवा से आई पं. मेवालाल पाटीदार की टोली ने यज्ञ संचालन करते हुए कहा कि यह मात्र धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि यज्ञीय जीवन शैली का प्रशिक्षण है, जिसे अपनाकर ही दुनिया में शान्ति-संतुलन की स्थापना की जा सकती है।

इस कार्यक्रम में केवल हवन ही नहीं हुआ, बल्कि लोगों के जीवन को ऊँचा उठाने के लिए योग शिविर, चिकित्सा परामर्श, रक्तदान शिविर हुए एवं विभिन्न संस्कार भी संपन्न कराये गए।

प्रज्ञा पुराण कथा

नगर, भरतपुर। राजस्थान

दिनांक 25 से 30 दिसम्बर 2022 की तिथियों में भरतपुर जिले के एक शहर नगर स्थित गायत्री शिक्षा निकेतन में प्रज्ञा पुराण कथा का अत्यंत प्रभावशाली आयोजन सम्पन्न हुआ। आयोजन की पूर्णाहुति नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ हुई। इस अवसर पर 32 गुरु दीक्षा, 6 पुंसवन सहित कुछ अन्य संस्कार हुए और 11 परिवारों में सद्ग्रंथों की स्थापना की गई। नगर में व्यवस्था समिति ने सन् 2024 में 108 कुण्डीय यज्ञ कराने का तथा 1 फरवरी 2023 से खेड़ली, जिला अलवर में पाँच दिवसीय प्रज्ञा पुराण कथा कराने के संकल्प उभरे।

वीर बाल दिवस से आरम्भ हुईं दो बाल संस्कार शालाएँ

भरतपुर। राजस्थान : इस वर्ष से भारत सरकार ने गुरु गोविंद सिंह के सुपुत्र, धर्म-संस्कृति के लिए अपने जीवन की आहुति देने वाले किशोर फतेह सिंह एवं जोरावर सिंह की स्मृति में 26 दिसम्बर को वीर बाल दिवस मनाने की परम्परा आरम्भ की है। यह पर्व बच्चों में आदर्शों के प्रति गहन निष्ठा तथा उत्कृष्टता के लिए त्याग की भावना जगाने के लिए समर्पित है। इस दिन गायत्री परिवार भरतपुर की दो बहिनों ने बाल उत्कर्ष की भावना से प्रेरित होकर अपने क्षेत्र में बाल संस्कार शालाएँ चलाने की घोषणा की।

1 जनवरी 2023 से परिव्राजक बहिन श्रीमती मनीषा शर्मा ने गायत्री शक्तिपीठ किला भरतपुर के परिसर में नई बाल संस्कार शाला आरम्भ कर दी। दूसरी बाल संस्कार शाला सूरजमल नगर, भरतपुर में स्व. श्री महेश शर्मा अध्यापक जी के घर पर श्रीमती राजकुमारी शर्मा ने आरम्भ की है।

यज्ञ विज्ञान और गर्भोत्सव के लिए सम्मान 'प्राइड ऑफ उज्जैन'

उज्जैन। मध्य प्रदेश

श्रीमती नीति टंडन उज्जैन की वरिष्ठ परिजन, दिया शाखा की संस्थापक सदस्य हैं। वे विक्रम विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान अध्ययन शाला से एस्ट्रोफिजिक्स में शोध कर रही हैं। उन्हें प्रतिष्ठित फ्री प्रेस अंग्रेजी समाचार पत्र समूह ने नगर गौरव सम्मान (प्राइड ऑफ उज्जैन) से सम्मानित किया है। जिला समन्वयक श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि उन्हें यज्ञ विज्ञान और गर्भोत्सव पर अनेक शोध पत्रों और आलेखों के प्रकाशन के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया है।

वाणी ही नहीं, व्यवहार में भी मधुरता का समावेश रखो।

स्वामी विवेकानन्द भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतिनिधि थे। - डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

स्वामी विवेकानन्द जी एक महान योद्धा सन्यासी थे, जिन्होंने तरह-तरह की सामाजिक बुराइयों से लड़ते हुए एक नया आयाम स्थापित किया। उनके विचारों ने मानवता को प्रतिकूलताओं से संघर्ष करते हुए सत्य, प्रेम और न्याय की ओर निरंतर अग्रसर होने का हौसला दिया। वे सभी जीवों में परमात्मा का अस्तित्व देखते थे और उसी भाव के साथ मानवता के उत्थान के लिए सक्रिय रहे। स्वामी जी भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतिनिधि थे, वे भारत की संस्कृति के कण-कण में बसे हैं। उनके अनुभूत कार्यों की परिकल्पना करना भी एक सुखद आश्चर्य होता है।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के पथ प्रदर्शक एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने उपरोक्त भावों के साथ स्वामी विवेकानंद जी को उनकी जयन्ती (12 जनवरी 2023) के दिन याद किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि स्वामी जी जैसे महान और चरित्र बल के धनी व्यक्ति कभी-कभी आते हैं। स्वामी जी के विचारों को आत्मसात करने से हम स्वयं भी ऊँचा उठेंगे और दूसरों का भी मार्ग प्रशस्त कर पायेंगे। आज ऐसे प्रतिभावान व कर्मठ युवाओं की जरूरत है, जो निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र के विकास के लिए कार्य कर सकें।

कुलाधिपति जी ने कहा कि आज की सबसे बड़ी संपदा युवा वर्ग है, इन्हें सही मार्गदर्शन एवं वातावरण मिल जाये तो वे हवा का रुख भी मोड़ते

युवा पथ प्रदर्शक स्वामी विवेकानन्द जी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

हुए नया कीर्तिमान स्थापित कर सकते हैं।

शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं गायत्री विद्यापीठ में युवा चेतना दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस उपलक्ष्य में तीनों स्थानों पर विविध कार्यक्रम, संगोष्ठियों का आयोजन हुआ। इनमें अनेक वक्ताओं ने स्वामी विवेकानन्द जी के व्यक्तित्व और विचारों का स्मरण कराया।

प्रातःकाल जनजागरण शोभायात्रा का भी आयोजन हुआ। श्रद्धेया शैल जीजी ने स्वामी जी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से युवाओं को प्रेरणा लेने का संदेश दिया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भी वीडियो संदेश तथा विभिन्न सोशल मीडिया माध्यमों से स्वामी जी के जीवन की विशेषताओं को अपनाने की प्रेरणा देशवासियों को दी।

युगचेतना विस्तार हेतु जनसंपर्क अभियान

परम पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि मेरे जो विचार हैं वे क्रान्ति के बीज हैं। ये जहाँ भी जाएँगे वहाँ एक नई क्रान्ति को जन्म देंगे। युगशक्ति गायत्री की प्रखर प्राण चेतना की जन-जन में प्रतिष्ठा आज का सबसे बड़ा युगधर्म है। अपने व्यक्तित्व, कृतित्व और प्रखर विचारों से इस युगधर्म को निभाने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं गायत्री परिवार के करोड़ों लोगों के मार्गदर्शक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी।

संघ प्रमुख से सांस्कृतिक पुनरुत्थान की योजनाओं पर चर्चा हुई

13 जनवरी को ही देसंविवि के प्रतिकुलपति जी नागपुर पहुँचे। वहाँ उन्होंने संघ कार्यालय पहुँचकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक माननीय श्री मोहन भागवत जी से भेंट की। श्री भागवत जी ने बड़े आत्मीय भाव के साथ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत किया। दोनों महानुभावों के बीच सनातन संस्कृति में युवाओं की नैतिक जिम्मेदारी पर चर्चा हुई।

माननीय श्री भागवत जी ने भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान में जुटे गायत्री परिवार की लगन और मेहनत की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि युवाओं को जगाना है तो एक-एक युवा के पास जाना होगा, जो आरएसएस के स्वयंसेवक एवं गायत्री परिवार के कार्यकर्ता बखूबी कर रहे हैं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने सरसंघचालक को युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित साहित्य, गायत्री मंत्र लिखित चादर एवं गायत्री माता का चित्र भेंटकर सम्मानित किया। उन्होंने जनवरी 2024 में मुंबई में होने जा रहे

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी माननीय श्री मोहन भागवत जी को गायत्री माता का चित्र भेंट करते हुए

अश्वमेध महायज्ञ में भागीदारी का निमंत्रण माननीय भागवत जी को दिया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया है।

दिल्ली में मंत्री, सांसद एवं गणमान्यों से भेंट

श्री पीयूष गोयल

श्री सर्वानंद सोनोवाल

श्री सुरेश प्रभु

श्रीमती अन्नपूर्णा देवी

श्री अनिल बलूनी

श्री किशन रेड्डी

श्रीमती मल्लिका नड्डा

लैफ्टिनेंट जनरल अनिल पुरी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय जी दिनांक 5 जनवरी 2023 को दिल्ली पहुँचे। वहाँ उन्होंने भारत सरकार के अनेक मंत्री एवं सांसदों से भेंट की। उनके साथ वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में चर्चा हुई, उन्हें परम पूज्य गुरुदेव के संकल्प, उनकी योजना और विचारों से अवगत कराया। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी की अनेक महानुभावों से जी-20 के कार्यक्रमों के संदर्भ में भी चर्चा हुई। उन्हें शान्तिकुञ्ज सहित विविध कार्यक्रमों में आने का आमंत्रण दिया। युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज की ओर से सभी को युगऋषि की विचार संजीवनी, उनका साहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

श्री पीयूष गोयल जी, माननीय केंद्रीय मंत्री (वाणिज्य और उद्योग) को विश्वविद्यालय के ज्ञान दीक्षा समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया है। शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में नूतन प्रकल्प को प्रारंभ करने हेतु आमंत्रित किया।

माननीय श्री सर्बानन्द सोनोवाल, (केंद्रीय कैबिनेट मंत्री आयुष मंत्रालय और पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय), संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री आदरणीय श्री किशन रेड्डी, सांसद माननीय श्री अनिल बलूनी जी (भाजपा के राष्ट्रीय मुख्य प्रवक्ता), केंद्रीय मंत्री माननीय श्री सुरेश प्रभु से अलग-अलग मुलाकात हुई। लैफ्टिनेंट जनरल अनिल पुरी से हुई मुलाकात में उन्हें शान्तिकुञ्ज आने का आमंत्रण दिया। इसी क्रम में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री जे.पी. नड्डा जी के घर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मल्लिका नड्डा जी से भी भेंट की।

अर्जित ज्ञान का सदुपयोग मानवता की भलाई के लिए होना चाहिए

आद. डॉ. चिन्मय जी मंच पर पं. शंकर प्रसाद अग्निहोत्री जी का अभिनन्दन करते हुए

पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कर रहे स्नातकों को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति जी का संदेश

वर्धा। महाराष्ट्र : देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 14 जनवरी 2023 को वर्धा में जय महाकाली शिक्षण संस्था, अग्निहोत्री ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस द्वारा आयोजित 'सेवा सत्कार समारोह 2023' के मुख्य अतिथि थे। वहाँ उन्होंने पीएच.डी. उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, अभिभावकों और गायत्री परिजनों को संबोधित किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने विद्यार्थियों को गुरु-शिष्य सम्बन्धों और उनके सामाजिक दायित्वों का बोध कराया। उन्होंने कहा कि मानवीय गरिमा इसमें है कि हम अपने ज्ञान और प्रतिभा का सदुपयोग समाज की भलाई के लिए करें। हम अवसरों को पहचानें तथा उदात्त संभावनाओं को साकार करने हेतु पूरी निष्ठा के साथ परिश्रम करें। उन्होंने कहा कि समाज हित में बहुमूल्य योगदान देना ही एक शिष्य का कर्तव्य है।

आरम्भ में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पं. शंकर प्रसाद अग्निहोत्री जी ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत किया। उन्होंने समारोह में उपस्थित मा. श्री मोहन जोशी जी (अभिनेता, मुंबई), मा. श्री समीर कुणावार (सांसद, हिंडनघाट) एवं अन्य गणमान्य अतिथियों को पूज्य गुरुदेव का साहित्य प्रदान कर सम्मानित किया।

मौन साधना शिविर

बेण्डेल, कोलकाता। प. बंगाल

गायत्री आश्रम राजहाट, बैण्डेल में 21 से 25 दिसम्बर 2022 की तिथियों में विशेष मौन साधना सत्र सम्पन्न हुआ। इसमें आर्ट ऑफ लिविंग संस्था से जुड़े 45 साधकों ने भाग लिया। शिविर काल में पूज्य गुरुदेव के विचारों पर चिन्तन-मनन के साथ आश्रम की 62 गायों वाली गौशाला की स्वच्छता के लिए नित्य श्रमदान किया। शिविर आयोजन में श्री रास बिहारी राय, उमेश जायसवाल, आर.एन. शर्मा का विशिष्ट योगदान रहा।

भूल सुधार

प्रज्ञा अभियान के 16 जनवरी 2023 के अंक में पृष्ठ 4 पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के प.बंगाल-बिहार के प्रवास के समाचार छपे हैं। इसमें 'प्रगतिशील विचारों के आधार पर ही भारत विश्व का नेतृत्व करेगा' शीर्षक किशनगंज में 108 कुण्डीय यज्ञ आयोजित होने की बात लिखी गई है।

वस्तुतः आद. डॉ. चिन्मय जी सिलीगुड़ी से किशनगंज और फिर वहाँ से **बेगूसराय** गये थे, जहाँ यह 108 कुण्डीय शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। भूलवश यह यज्ञ किशनगंज में होने के समाचार प्रकाशित हो गए हैं। कृपया उस समाचार को भूल सुधार कर पढ़ें। अनजाने में हुई इस भूल के लिए हमें खेद है। **- संपादक**

गुजरात के राज्यपाल से प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने पर चर्चा हुई

13 जनवरी 2023 को अपने गुजरात प्रवास में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी गाँधीनगर स्थित राजभवन में राज्यपाल माननीय आचार्य देवव्रत जी से भेंट करने पहुँचे। शान्तिकुञ्ज की ओर से उन्हें पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट किया। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल जी से प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा देने हेतु योजना पर चर्चा हुई। राज्यपाल महोदय ने आद. डॉ. चिन्मय जी द्वारा दिया गया शान्तिकुञ्ज आने का निमंत्रण सहर्ष स्वीकार किया।

गुजरात के राजभवन में राज्यपाल के साथ शान्तिकुञ्ज की टोली एवं स्थानीय कार्यकर्त्ता

भाग्य भरोसे बैठे रहने वाले आलसी सदा दीन-हीन ही रहेंगे। - अथर्ववेद 13/3/1

जोशीमठ में 1000 परिवारों की सहायता की

हमारे परिजन पीड़ितों को अपने परिवार की तरह ही सान्त्वना दें और उनका मनोबल बढ़ायें।
- श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी

इन दिनों उत्तराखण्ड का जोशीमठ भू-धँसाव की भयंकर प्राकृतिक आपदा का शिकार है। जैसे ही वहाँ के निवासियों के विस्थापन की जानकारी शान्तिकुञ्ज को मिली, वैसे ही युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज का आपदा प्रबन्धन दल सक्रिय हो गया। श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब के निर्देशानुसार अविलम्ब एक दल 9 जनवरी को ही जोशीमठ पहुँच चुका था। दल द्वारा वहाँ की स्थितियों का आकलन किया गया और उसके अनुमान के आधार पर लगभग 1000 परिवारों के लिए तत्काल आवश्यकता की पूर्ति हेतु राशन भेजा गया।

मानवता पर आने वाली हर त्रासदी में गायत्री परिवार के परिजन आगे बढ़कर सेवाएँ प्रदान करते रहे हैं। जोशीमठ के पीड़ित परिवारों की सहायता के लिए भी शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ताओं में बहुत उत्साह देखा गया। सबने मिलकर बड़ी श्रद्धा के साथ राशन के किट तैयार किए और उन्हें लेकर एक टीम जोशीमठ पहुँची।

सामग्री लेकर रवाना हो रहे राहत दल के भाइयों को श्रद्धेय डॉक्टर साहब एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने मंगल तिलक कर विदाई दी। उन्होंने कहा कि कठिन परिस्थितियों में रह रहे पहाड़ के अपने भाइयों की पीड़ा को कम करने के लिए गायत्री परिवार सदैव तत्पर है। परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के आदर्शों की याद दिलाते हुए उन्होंने दल को राहत सामग्री के साथ अपने परिवार के सदस्यों की तरह ही सान्त्वना देने और उनका मनोबल बढ़ाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में यदि और आवश्यकता होगी तो शांतिकुंज की ओर से यह प्रयास जारी रहेगा।

एक किट की सामग्री

चावल- पांच किग्रा,
आटा- पांच किग्रा,
दाल- दो किग्रा,
चीनी-दो किग्रा,
तेल- एक लीटर,
नमक, हल्दी, मिर्च आदि।

शान्तिकुञ्ज से दल को व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस राहत दल में डॉ. उमाकांत इंदोलिया, डॉ. अरुणेश पाराशर, नरेन्द्र गिरि, पवन राजौरिया, प्रखर सिंह एवं राकेश वर्मा आदि शामिल थे।

शान्तिकुञ्ज में राशन की किट तैयार करते कार्यकर्त्ता और जोशीमठ में राहत सामग्री वितरित करती टोली

18वीं राष्ट्रीय जम्बूरी में भारत स्काउट गाइड शान्तिकुञ्ज का उत्कृष्ट प्रदर्शन

बैण्ड वादन में प्रथम, अन्य कार्यक्रमों से भी आकर्षित हुए अतिथिगण

स्काउट गाइड जनपद शान्तिकुञ्ज के प्रतिभागी अपने प्रदेश का नेतृत्व करते हुए, दायें श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब से आशीर्वाद लेते हुए

शान्तिकुञ्ज स्काउट गाइड ने राजस्थान के पाली में 4 से 10 जनवरी को हुए 18 वीं राष्ट्रीय जम्बूरी में राज्य का प्रतिनिधित्व किया। गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज के दल ने महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू की प्रज्ञा बैण्ड की सुमधुर ध्वनि के साथ अगवानी की। इसके पश्चात विभिन्न साहसिक एवं बौद्धिक प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। शान्तिकुञ्ज के बैण्ड वादन को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है।

कंटीजन लीडर श्री मंगल सिंह गढ़वाल के नेतृत्व में गायत्री विद्यापीठ एवं प्रशिक्षकों सहित 46 सदस्यीय दल जम्बूरी में प्रतिभाग करने गया था। पूरे देश से 37 हजार से अधिक स्काउट गाइड जम्बूरी में भाग ले रहे थे। श्रीलंका, बांग्लादेश, भूटान से भी प्रतिभागी आए। राष्ट्रीय जम्बूरी का समापन राष्ट्रीय जम्बूरी के वरिष्ठ प्रतिनिधियों एवं राजस्थान सरकार के गणमान्यों की मौजूदगी में हुआ था।

अपनी सफलता से उत्साहित दल अपने सर्वोच्च अभिभावक श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल दीदी से भेंट करने पहुँचा। टीम ने बैण्ड में मिला प्रथम पुरस्कार उन्हें सौंपा और आशीर्वाद लिया।

श्रद्धेय द्वय ने कहा कि गायत्री विद्यापीठ एवं शान्तिकुञ्ज में विद्यार्थियों को समग्र व्यक्तित्व विकास का जो अवसर मिल रहा है, वह अद्वितीय है। हमारे विद्यार्थी शिक्षा, योग, खेल, बौद्धिक प्रतियोगिता आदि हर क्षेत्र में नित नये कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि स्काउट-गाइड की शिक्षाएँ व्यक्तित्व विकास एवं सभ्य समाज के निर्माण में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

स्काउट की शिक्षाएँ व्यक्तित्व विकास एवं सभ्य समाज के निर्माण में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

श्रद्धेया शैलदीदी ने ठंड के बीच नौनिहालों द्वारा प्रदर्शित कौशल की सराहना की और उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दी। शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी, देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी, विद्यापीठ प्रबंध मण्डल की प्रमुख श्रीमती शेफाली जी सहित देसंविवि व शान्तिकुञ्ज परिवार ने दल को जीत की बधाई दी।

शान्तिकुञ्ज जनपद के दल में सर्वश्री नरेन्द्र सिंह, विनय शर्मा, सोमेश्वर ताण्डी, श्रीमती गायत्री साहू, श्रीमती आराधना शर्मा ने संरक्षक-मार्गदर्शक की भूमिका निभाई।

उत्तराखण्ड का गौरव

उत्तराखण्ड में शान्तिकुञ्ज को भारत स्काउट गाइड के एक अलग जनपद के रूप में मान्यता प्राप्त है। जब से इसे अलग जनपद के रूम में मान्यता मिली है, तब से शान्तिकुञ्ज स्काउट गाइड उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है। राष्ट्रीय जम्बूरी के इतिहास में यह पहला मौका है कि उत्तराखण्ड का नाम रोशन करते हुए शान्तिकुञ्ज स्काउट गाइड इकाई को बैण्ड में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

शानदार प्रदर्शन

- जम्बूरी में लगाई गई उत्तराखण्ड की प्रदर्शनी को अतिथियों ने खूब सराहा।
- स्काउट-गाइड ने अपने-अपने कैंप में परंपरागत वेशभूषा में आगंतुकों का स्वागत करते हुए अपनी गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत का परिचय दिया।
- शान्तिकुञ्ज के स्काउट गाइड द्वारा लगाए गए फूड प्लाजा में देश-विदेश से आये अतिथियों का तांता लगा रहा। सभी ने देवभूमि के व्यंजनों का लुत्फ लिया।
- शान्तिकुञ्ज सहित देवभूमि के स्काउट्स गाइड्स को एडवेंचर सहित अनेक प्रतियोगिताओं में कई पुरस्कार मिले।

देसंविवि में बी.एन.वाय.एस. चिकित्सक की आवश्यकता है

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में संचालित पूरक एवं वैकल्पिक चिकित्सा विभाग में प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में सेवाएँ प्रदान करने के लिए बी.एन.वाय.एस. डॉक्टर (पुरुष या महिला) की आवश्यकता है। ब्राह्मणोचित मानदेय एवं जीवन निर्वाह की सुविधाएँ दी जायेंगी। सेवाभावी चिकित्सक विस्तृत जानकारी प्राप्त करने अथवा **आवेदन के लिए संपर्क कीजिए:** Email: dcam.dsvv@gmail.com
फोन : 01334-261367 (एक्सटेंशन-5541, 5542) मोबाइल : 70554 55521

टोरंटो में दीपयज्ञ से किया नववर्ष का स्वागत

टोरंटो। कनाडा : गायत्री परिवार की टोरंटो शाखा ने नववर्ष-2023 का स्वागत दीपयज्ञ के साथ किया। इस अवसर पर दिखाए गए श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पड्या जी के वीडियो संदेश ने सभी को उनके युगधर्म की याद दिलाई।

दीपयज्ञ में भाग लेने के लिए ओंटारियो प्रांत के 10 से अधिक शहरों से परिजन पधारे। वार्षिक समीक्षा एवं भावी कार्ययोजना सम्बन्धी संगोष्ठी हुई। इस अवसर पर क्षेत्र में एक नवीन गायत्री चेतना केंद्र की प्राण प्रतिष्ठा के संकल्प सहित पूरे क्षेत्र में युगचेतना विस्तार हेतु सक्रियता के अनेक संकल्प लिए गए।

देव संस्कृति विवि. में शरीर शुद्धि, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

प्राकृतिक एवं वैकल्पिक चिकित्सा से समग्र स्वास्थ्य के लिए परम पूज्य गुरुदेव के बताये सूत्रों को अपनाते हुए देव संस्कृति विश्वविद्यालय में दिनांक 18 से 25 दिसम्बर 2022 की तिथियों में शरीर शुद्धि, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर सम्पन्न हुआ। 10 राज्यों से आए 108 लोगों ने इसका लाभ लिया। योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग से ही उनके मधुमेह, मोटापा, कब्ज, गैस, एसिडिटी, रक्तचाप, हृदय रोग, दमा, जोड़ों का दर्द, वेरीकोज वेन, कमर दर्द, गर्दन दर्द, आँखों में जलन, त्वचा रोग, महिला व पुरुष के गुप्तरोग, अनिद्रा, तनाव, चिन्ता, मानसिक रोग इत्यादि की सफल चिकित्सा की गई।

यह शिविर पूर्णआवासीय था। चिकित्सा के लिए विभिन्न आसन, जलनेति, रबर नेति, कुंजल क्रिया, कपालभाति के साथ मिट्टी पट्टी, कटि स्नान, रीढ़ स्नान, हस्तपाद स्नान, भाप स्नान, मिट्टी स्नान, एनिमा व शंख प्रक्षालन जैसी क्रियाएँ अपनाई गईं। सात दिनों तक पूर्ण प्राकृतिक आहार की व्यवस्था थी, जिसमें रसाहार, फलाहार, अमृत आहार का ही प्रयोग हुआ।

इस शिविर के प्रतिभागियों को आश्चर्यजनक लाभ मिले। उनका वजन लगभग 8 से 10 किलो घटा। घुटने का दर्द, कमरदर्द, कब्ज आदि में पूर्णतया लाभ प्राप्त हुआ।

शरीर शुद्धि, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का लाभ लेते प्रतिभागी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में ऐसे ही शरीर शुद्धि, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर निम्न तिथियों में आयोजित हो रहे हैं।

12 से 19 फरवरी 2023
12 से 19 मार्च 2023 और
23 से 30 अप्रैल 2023

शिविर में भागीदारी के लिए नियम, सुविधाएँ एवं पंजीयन प्रक्रिया को जानने के लिए सम्पर्क कीजिए:
पूरक एवं वैकल्पिक चिकित्सा विभाग,
देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुंज-शान्तिकुंज, हरिद्वार-249411
मोबाईलनं. 9258369512, 7543816094, 7746986569
Email: dcam.dsvv@gmail.com
https//dsvv.ac.in/camps/yogaandnaturopathy/
पर ऑनलाइन या देव संस्कृति विवि आकर ऑफलाइन पंजीयन भी करवाया जा सकताहै।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 27.01.2023
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23